मुंबई मिंट पत्रिका

अंक : अट्ठाईस • वर्ष : 2024

भारत सरकार टकसाल

(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)
एनएबीएल/आईएसओ : 17025:2017, 17034:2016, 17043:2010, 9001:2015, 14001:2015, 45001:2018 प्रमाणित संगठन
सीआईएन : U22213DL2006GOI144763
मिनी-रत्न श्रेणी-1 सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
शहीद भगतसिंह रोड, फोर्ट, मुंबई-400 001. टेलीफोन : 91-22-2270 3184/2266 2555
फैक्स : +91-22-2266 1450 • ई-मेल : igm.mumbai@spmcil.com • वेबसाइट : www.igmmumbai.spmcil.com

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), मुंबई (उपक्रम) द्वारा भारत सरकार टकसाल, मुंबई को वित्त वर्ष 2023-24 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए दिनांक 17-7-2024 को नराकास की बैठक में प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मुंबई मिंट पत्रिका

* संरक्षक *
श्री सुधीर साहू
मुख्य महाप्रबंधक

* मार्गदर्शक *
सुश्री इंदरदीप कौर
उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

* संपादक *
सुश्री प्रेरणा पुरी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

* सहयोग *
श्री एल. के. पाल
पर्यवेक्षक (राजभाषा)

श्री अंशुल कुमार
कनिष्ठ कार्यालय सहायक (राजभाषा)

अंक : अट्ठाईस
गृह पत्रिका

■ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किये गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं। रचना की मौलिकता और अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

अनुक्रमणिका

❖	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश	2
❖	निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश	3
❖	निदेशक (वित्त) का संदेश	4
❖	मुख्य सतर्कता अधिकारी का संदेश	5
❖	मुख्य महाप्रबंधक का संदेश	6
❖	संपादकीय	7

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
1.	व्यक्ति और समष्टि के बीच के अन्तर को कम करती है: कला और कहानियाँ	दर्शन मधुकर महाजन	8-9
2.	आओ करें हम्पी की सैर: यात्रा वृत्तान्त	जय कावरे	10-11
3.	साइबर हमले से कैसे रहें सुरक्षित	नीता मिश्रा	12-13
4.	वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी): परिभाषा और प्रकार	कविता संपत राव मोरे	14-15
5.	सातवें दरवाज़े का रहस्य: पद्मनाभस्वामी मंदिर	गौरी के. कुट्टी	16
6.	पैदल चलने की परिकल्पना: सैर से हाइकिंग तक !	गीता उदयावर	17
7.	कविता: ज़िंदगी	अमर अजीत लहरिया	17
8.	महिलाओं की प्रगति, देश की प्रगति	स्वप्नाली मोरे	18-19
9.	स्वप्न और भ्रष्टाचार	पुरेन्द्र चिन्तामणि दूबे	20
10.	20-20 वर्ल्ड कप 2024 का रोमांचक फाइनल	पुरेन्द्र चिन्तामणि दूबे	20
11.	ऑलंपिक खेलो का इतिहास	अंशुल कुमार	21-23
12.	चार धाम यात्रा: अविस्मरणीय अनुभव	दीपक वसंत फुंडे	24-26
13.	कारगिल विजय दिवस: ज़रा याद करो कुर्बानी	अमित भास्करराव कौलकार	27-28
14.	काठी के नीचे ज़ेवर (कहानी)	सुनील रॉय	29
15.	क्यों ज़रूरी है राजभाषा हिन्दी? – एक परिचर्चा	लालमनी पाल	30-31
16.	मराठी भाषा दिवस		31
17.	विश्व हिन्दी दिवस		32-33
18.	एसपीएमसीआईएल अंतर–इकाई राजभाषा सम्मेलन (कोलकाता)		34
19.	हिन्दी पखवाड़ा, 14-29 सितंबर, 2023		35-36
20.	एसपीएमसीआईएल स्थापना दिवस		37
21.	सतर्कता जागरुकता सप्ताह		38
22.	राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह		39
23.	सीएसआर की पहल		40
24.	अन्य गतिविधियों की झलकियाँ		41-44

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
मिनिरत्न श्रेणी–I, सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)

Security Printing and Minting Corporation of India Limited
Miniratna Category-I, CPSE
(Wholly owned by Government of India)

विजय रंजन सिंह, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Vijay Ranjan Singh, Chairman & Managing Director

संदेश

यह जानकर बेहद प्रसन्नता हुई कि भारत सरकार टकसाल, मुंबई की '**मुंबई मिंट पत्रिका**' का नया अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका अपने अनवरत प्रकाशन को आगे बढ़ाती हुई, अपने कर्मचारियों को भावाभिव्यक्ति का मौका देती है।

एसपीएमसीआईएल की सभी इकाइयां उत्पादन के साथ–साथ राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं। राजभाषा विभाग की '**प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना**' की नीति को ध्यान में रखते हुए, हम प्रत्येक कर्मचारी को इसमें शामिल करने का प्रयास करते हैं। इसी के परिणामस्वरूप भारत सरकार टकसाल, मुंबई को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई (उपक्रम) द्वारा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, जो हमारे लिए गर्व का विषय है।

मुंबई मिंट पत्रिका भी राजभाषा के क्षेत्र में किए जा रहे इन्हीं निरंतर प्रयासों का एक प्रतीक है। अंत में, मैं सभी से यही कहूँगा कि कलात्मक बने रहिए, लिखते रहिए, पढ़ते रहिए, ज्ञान बटोरते रहिए, कल्पना करते रहिए और उन कल्पनाओं को सच करने के प्रयास करते रहिए।

मुंबई मिंट पत्रिका के संपादक मंडल को पुन: पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई तथा सभी लोगों को आगामी हिंदी दिवस के लिए शुभकामनाएँ।

(विजय रंजन सिंह)

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
मिनिरत्न श्रेणी–I, सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)

Security Printing and Minting Corporation of India Limited
Miniratna Category-I, CPSE
(Wholly owned by Government of India)

सुनील कुमार सिन्हा, निदेशक (मानव संसाधन)
Sunil Kumar Sinha, Director (Human Resources)

संदेश

मेरे प्यारे साथियों,

हिंदी दिवस पर भारत सरकार टकसाल, मुंबई की '**मुंबई मिंट पत्रिका**' के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका भाषा, साहित्य, कला से जुड़ने और लोगों को जोड़े रखने का सशक्त और रोचक माध्यम है।

संत कबीरदास आम जनता की भाषा, सरल भाषा के महत्त्व को दर्शाते हुए कह गए हैं

''संसकिरत है कूप जल, भाखा बहता नीर''

पिछले कुछ वर्षों से भारत सरकार की भाषा संबंधी नीति में एक महत्त्वपूर्ण आयाम राजभाषा को सरल बनाने का है। इसका उल्लेख भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम 2024-25 में भी किया गया है, जिसमें केंद्रीय हिंदी समिति की 31वीं बैठक में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा सुझाव दिया गया है कि सरकारी हिंदी और सामाजिक हिंदी के अंतर को कम किया जाये। इसी ध्येय को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार टकसाल, मुंबई में राजभाषा का कुशल कार्यान्वयन किया जा रहा है। यहाँ की स्थानीय भाषा 'मराठी' और राजभाषा हिंदी के गहरे संबंध के कारण, यहां के सभी कर्मचारी अपनी भाषा में कार्य करते हुए गौरवान्वित होते हैं। राजभाषा हिंदी में कार्य करने से इनका पत्राचार स्पष्ट एवं सुलभ रहता है, जिसकी गवाह टकसाल की सफल कार्यप्रणाली है।

मुझे ज्ञात हुआ कि इस वर्ष भारत सरकार टकसाल, मुंबई को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस पुरस्कार के लिए टकसाल के राजभाषा विभाग के साथ–साथ समस्त कर्मचारियों को बहुत बधाई।

बस इसी तरह भाषा उन्नति का यह कारवां चलता रहे और हमारी भाषा का विस्तार होता रहे।

एक बार पुन: नए अंक के प्रकाशन तथा हिंदी दिवस के लिए बधाई और शुभकामनाएं।

(सुनील कुमार सिन्हा)

मुंबई मिंट पत्रिका

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
(वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)

Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Under Ministry of Finance, Government of India)

अजय अग्रवाल, निदेशक (वित्त)
AJAY AGARWAL, Director (Finance)

संदेश

साथियों,

हिंदी दिवस की हार्दिक बधाई!

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि भारत सरकार टकसाल, मुंबई द्वारा '**मुंबई मिंट पत्रिका**' 2024 प्रकाशित होने जा रही है।

किसी भी राज्य के निर्माण में भाषा का बहुत बड़ा योगदान होता है। भाषा मात्र अभिव्यक्ति का साधन नहीं है, वह एक राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति है। महात्मा गाँधी का मानना था कि ''राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।'' आदि युग से लेकर आज 21वीं सदी तक मनुष्य ने प्रतीकों, संकेतों, बोलियों तथा उसके बाद भाषा के माध्यम से अपने विचारों को प्रकट किया है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, समसामयिक परिस्थितियों के अनुसार मनुष्य नये संसाधनों का आविष्कार करता रहता है। आज जब कम्प्यूटर और इंटरनेट जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं, तो हमारी राजभाषा हिन्दी भी निश्चित तौर पर प्रौद्योगिकी के साथ तालमेल बैठाकर वैश्विक पटल पर निर्बाध रूप से अपने पथ पर अग्रसर हो रही है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से इस दिशा में अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। स्मृति आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर, कंठस्थ 2.0, हिन्दी ई–महाशब्दकोश, शब्द सिंधु, स्व–हिन्दी प्रशिक्षण सॉफ्टवेयर लीला, आदि ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो भाषा को समय के साथ समृद्ध कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त भी लार्ज लैङ्गवेज मॉडल्स (एलएलएम) के तहत कृत्रिम बौद्धिकता का प्रयोग करके मशीनी अनुवाद में सुधार किए जा रहे हैं। इन्हीं का प्रयोग करके भाषा आत्म–विस्तृत होती रहती है।

मुंबई मिंट पत्रिका से जुड़े, इकाई के समस्त कर्मचारियों को पत्रिका प्रकाशन एवं नराकास, मुंबई (उपक्रम) द्वारा भारत सरकार टकसाल, मुंबई को उत्कृष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ। आशा करता हूँ कि आगे भी भाषा उन्नति में इसी तरह आप सभी का योगदान जारी रहे। इसी के साथ सभी को हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित।

अजय अग्रवाल

(अजय अग्रवाल)

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
(वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)

Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Under Ministry of Finance, Government of India)

विनय कुमार सिंह भा.रा.से., मुख्य सतर्कता अधिकारी
Vinay K. Singh, I.R.S., Chief Vigilance Officer

संदेश

साथियों,

भारत सरकार टकसाल, मुंबई की '**मुंबई मिंट पत्रिका**' के प्रकाशन के लिए तथा हिन्दी दिवस के अवसर पर हार्दिक बधाई।

साहित्य वह सशक्त माध्यम है, जो समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करता है। यह समाज में प्रबोधन की प्रक्रिया का सूत्रपात करने के साथ–साथ लोगों को प्रेरित करने का कार्य करता है। अच्छा साहित्य किसी व्यक्ति के चरित्र निर्माण में भी सहायक होता है।

सतर्कता विभाग के उद्देश्यों की पूर्ति में साहित्य का बहुत बड़ा योगदान है। इससे समाज को दिशा–बोध होता है और साथ ही उसका नवनिर्माण भी। प्रत्येक वर्ष एस.पी.एम.सी.आई.एल. के सभी कर्मचारी सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान सत्यनिष्ठा की शपथ लेते हैं। इस शपथ की पूर्ति हेतु नैतिकता और अनैतिकता का मोल हमें साहित्य सिखाता है, यह हमारी सतर्कता की आँख खुली रखने में मदद करता है। इन भूमिकाओं के निर्वहन में '**मुंबई मिंट पत्रिका**' में छपी रचनाएं हमें प्रासंगिक सामाजिक मुद्दों को लेकर सतर्क बनाए रखती हैं।

भारत सरकार टकसाल, मुंबई द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य किए जा रहे हैं। संस्थान को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए इस वर्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई (उपक्रम) द्वारा प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है। यह सम्मान संगठन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति उनके समर्थन और विश्वास को प्रदर्शित करता है।

मैं आशा करता हूं कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आप सभी अपना योगदान जारी रखेंगे पत्रिका के माध्यम से नए साहित्य की रचना करते रहेंगे।

मिंट पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं हिन्दी दिवस के लिए पुन: मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(विनय कुमार सिंह)

संरक्षक की कलम से...

प्रिय साथियों,

हृदयगत अभिवादन!

मुझे बेहद खुशी हो रही है कि मुंबई '**मुंबई मिंट पत्रिका**' का नया अंक, नई रचनाओं और प्रतिभाओं के साथ प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका टकसाल में होने वाली तमाम गतिविधियों का एक समेकित प्रतिबिंब है, जो प्रत्येक वर्ष हमें, गत वर्ष की सुखद यादों से पुनः जुड़ने का अवसर देती है। प्रत्येक पृष्ठ से गुज़रते हुए हम उस विषय, एवं स्मृति के साथ जुड़े प्रत्येक भाव को जैसे पुनः महसूस कर पाते हैं। यही तो खूबी है, कला की।

हिंदी भाषा हमारे इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सदा सहायक रही है। टकसाल, मुंबई में राजभाषा नीति का कुशल कार्यान्वयन किया जाता है। संचार को सुग्राही बनाने के लिए हम हिंदी का उपयोग सरल तरीके से करते हैं ताकि इसे हम स्वाभाविक रूप से अपने कामकाजी जीवन का हिस्सा बना सकें। इस वर्ष भारत सरकार टकसाल, मुंबई को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई (उपक्रम) द्वारा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, जिसका श्रेय यहां के प्रत्येक कर्मचारी को जाता है, जिन्होंने राजभाषा हिन्दी में अपना अधिकाधिक कार्य किया।

आशा करता हूँ कि पाठक, '**मुंबई मिंट पत्रिका**' के इस नए अंक के माध्यम से राजभाषा हिंदी तथा यहाँ के कर्मचारियों की प्रतिभाओं के और निकट पहुंच सकेंगे।

नए अंक के प्रकाशन की और आगामी हिंदी दिवस की सभी को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(सुधीर साहू)
मुख्य महाप्रबंधक

संपादकीय

सादर अभिनंदन,

प्रासंगिकता! हम सभी जीवन में प्रासंगिक रहने की निरंतर कोशिश करते रहते हैं। अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए हम अपने आप को हर नई चीज़ से, नए मुद्दों से, नए ज्ञान से अद्यतित रखते हुए अपनी पहचान बनाए रखने की कोशिश करते हैं। यह निर्विवादित सत्य है कि स्थितियां–परिस्थितियां तो बदलती रहती हैं। उनके अनुसार हम कितने अनुकूलित होते हैं, यही हमें सफ़ल बनाता है। यही हमें पल–पल परिवर्तित होते संसार में प्रासंगिक बनाए रखता है।

मुंबई मिंट पत्रिका का यह नया अंक भी इसी प्रयास का एक उदाहरण है। इस बार पत्रिका में छपे लेख समाज के मुद्दों के प्रति अधिक प्रासंगिक और मौलिक हैं। एक ओर जहां लोक–कथाओं से प्रेरित होकर कला की रचना की गई और उस रचना की प्रक्रिया को अपनी भाषा में, शब्दों के माध्यम से समझाया गया है, वहीं दूसरी ओर वित्तीय साक्षरता के उद्देश्य से निजी वित्त प्रबंधन को सरल शब्दों में आप तक पहुंचाने की कोशिश की गई है। यात्रा वृत्तान्त, दो भिन्न आयु वर्ग के लोगों द्वारा हम्पी की हाइकिंग पर और चारधाम की यात्रा पर लिखे गए। कितना सुखद होता है, ऐसे मौलिक अनुभवों को पढ़ना। इन लेखों का आधार कर्मचारियों के अपने अनुभव, रुचि और जीवन है। यही मिंट पत्रिका को अधिक प्रासंगिक बनाता है।

मेरा ऐसा मानना है कि हम अपने कार्य से जाने जाते हैं। अपने काम में सदा कुछ नया और प्रभावी करने की एक ललक हमेशा रहनी चाहिए। इन नवाचारों को अपनाने और व्यापक स्वीकृति की अपनी चुनौतियाँ होती हैं, लेकिन यही तो जीवन का उत्प्रेरक है। इस बार पत्रिका में प्रकाशन के लिए बहुत सारी प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई। सभी लेखकों को और टकसाल, मुंबई के सभी कर्मचारियों का धन्यवाद, जो राजभाषा हिन्दी के प्रति सजग और स्वीकार्य भाव रखते हैं।

पिछले वर्ष मुंबई मिंट पत्रिका को स्नेह देने के लिए और अपनी प्रतिक्रियाएँ देने के लिए आप सभी पाठकों के प्रति हृदयतल से आभार प्रकट करते हैं। मुंबई मिंट पत्रिका का यह नया अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

आशा करते हैं यह नया अंक आपकी आशाओं के अनुरूप हो और पिछली बार दिये गए सुझावों को समेटे हुए हो।

आगामी हिंदी दिवस की शुभकामनाओं के साथ।

प्रेरणा पुरी

(प्रेरणा पुरी)
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

व्यक्ति और समष्टि के बीच के अंतर को कम करती: कला और कहानियाँ

दर्शन मधुकर महाजन
उत्कीर्णक (कला एवं उत्कीर्णन)

जिस तरह दुनियाभर के कलाकार अपने विचारों और अनुभवों को विभिन्न तरीकों से व्यक्त करते हैं, उसी तरह मेरे लिए कला एक आत्मकथात्मक प्रस्तुति की तरह है। मेरे जीवन में मेरे परिवेश, मेरे परिवार, दोस्त, कार्यस्थल, समाज, राजनीति, और उन तमाम लोगों का, जिनसे मैं मिलता हूं, बहुत महत्व रहा है। इन सभी तत्वों का मेरे जीवन और मेरी कलाकृतियों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। मेरा मानना है कि कला का प्रत्येक रूप समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह समाज की सामूहिक स्मृति का भंडार होता है। यह स्मृति मुख्य रूप से उन नैतिकताओं, कथाओं, दंतकथाओं, मिथकों और किंवदंतियों पर आधारित होती है, जो समाज में प्रचलित होती हैं। ये मिथक और कथाएं हमें, हमारे समाज, उसके मूल्यों और कार्य प्रणाली के बारे में बहुत कुछ बताते हैं। इन कथाओं की कई परतें होती हैं, और यह हमें विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने की समझ देती हैं। मुझे हमेशा इन कथाओं की दृश्यात्मक अभिव्यक्ति आकर्षित करती है, जैसे अजंता की चित्र कथाएँ, जो जातक कथाओं पर आधारित हैं, भारतीय मिथकों पर आधारित भित्ति चित्र और मूर्तियाँ, लघु चित्रकला, पटचित्र और अन्य लोक कलारूप बहुत प्रेरणादायक लगते हैं; वे मुझे अपने अनुभवों और समझ को दृश्यात्मक रूप से व्यक्त करने में मदद करते हैं।

इसी बीच मेरी दिलचस्पी, लोकप्रिय और बोलचाल के मुहावरों में बढ़ने लगी। ये मुहावरे, जो रूपक से भरपूर और रोज़मर्रा के अनुभवों में निहित हैं, मानव व्यवहार और सामाजिक मानदंडों की बारीकियों को जीवंत और हास्यपूर्ण तरीके से व्यक्त करते हैं। वे जटिल विचारों और भावनाओं को संक्षेप लेकिन स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं। उन लोगों की बुद्धि, चतुराई और सांस्कृतिक भावना को प्रतिबिंबित करते हैं, जो उनका उपयोग करते हैं। जैसे, 'दो मुंहा इंसान' और 'नकोतिथेनाकखुपसणे (मराठी)' मुहावरे,

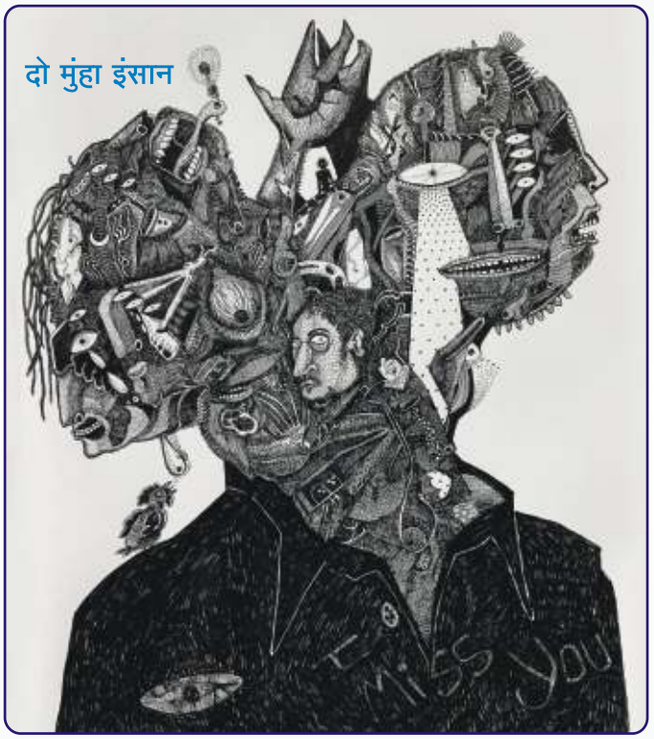

दो मुंहा इंसान

लोगों के अपने सामाजिक संसार को देखने और नेविगेट करने की दृष्टि प्रदान करते हैं। ये मुहावरे अमूर्त धारणाओं को मूर्त रूप देने में काम आते हैं, जो कला की प्रेरणा बनते हैं। यहाँ मैंने दो मुंहे इंसान का चित्र बनाया है।

पौराणिक कथाओं, भारतीय कलाओं और मिथकों में रुचि ने मुझे दुनियाभर की अन्य संस्कृतियों की कहानियों को खोजने और पढ़ने के लिए प्रेरित किया। तब मैंने मुंबई विश्वविद्यालय से तुलनात्मक पौराणिक कथाओं में पीजी डिप्लोमा किया। यहाँ, मुझे दुनियाभर की मिथकों, कहानियों और किंवदंतियों से परिचित कराया गया। जोसेफ कैंपबेल, ए.के. रामानुजन, सिगमंड फ्रायड, कार्लजंग, लेवी–स्ट्रॉस, एलियाड और अन्य विद्वानों के सिद्धांतों ने

मुझे यह समझने में मदद की क्यों और कैसे दुनियाभर में मिथक या कहानियाँ बनाई जाती हैं और वे समाज और लोगों को कैसे आकार देती हैं। इन सिद्धांतों को समझने से समाज, प्रथाओं और मिथकों के बीच के संबंध की सराहना करने में मदद मिली, जिससे मुझमें स्वीकार्यता का भी विस्तार हुआ।

पूर्वोत्तर भारतीय लोककथाओं पर आधारित एक पौराणिक पात्र आधे बाघ और आधे मानव विशेषताओं वाला एक प्राणी है, जो वहां की पौराणिक कहानियों में प्राचीन चिकित्सक 'कबुईस लंगमैबा' से परिवर्तित हुआ है। यह एक दयालु, समर्पित और कुशल प्राचीन चिकित्सक की कहानी है, जो बीमार लोगों का इलाज करने के लिए जगह-जगह जाता था। धीरे-धीरे उसके ज्ञान की इतनी वृद्धि हो गई, कि उसके पास इतनी शक्तिआ आई, कि वह जो चाहे, वो कर सकता था। तब उसने स्वयं को बाघ में बदलना चाहा। लेकिन, जैसे ही वह के इबूकेइ ओइबा नामक बाघ जैसा प्राणी बना, उसने दहाड़ने और डराने की बाघ प्रवृत्ति विकसित कर ली। इसके बाद सभी उससे दूर भागने लगे, वह भोजन के लिए लोगों का ही शिकार करने लगा। यह कहानी हमें मानव स्वभाव और लालच के दुष्प्रभावों के बारे में एक सबक सिखाती है।

प्रकृति के साथ कुछ समय बिताने और उसके बीच बैठकर उसके तत्व को आधार बनाकर कला को विशेष रूप देने के उद्देश्य से मैंने और मेरे कुछ कलाकार साथियों ने मिलकर, 'कनगा आर्ट फाउंडेशन' की स्थापना की, जिसमें हम सभी पर्यावरण और संबन्धित लोगों के साथ जुड़कर, परिवेश को अपने में समा कर अपनी अभिव्यक्ति करते हैं। मेरे यह अनुभव, यह पौराणिक कथाएँ, यह परिवेश का प्रतिबिंब मेरे काम में दिखाई देता है।

अंत में, एक कलाकार के रूप में, हमें अपनी अभिव्यक्ति, रियाज, चर्चाओं, परिवेश के प्रति सजगता आदि को जीवंत रखना चाहिए। यही हमारी कला के प्रेरणा और उत्पादक स्त्रोत बनते हैं।

संविधान का अनुच्छेद-351

''संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।''

आओ करें हम्पी की सैर: एक यात्रा वृत्तान्त

जय कावरे
बुलियन लेखपाल (बुलियन)

हम्पी एक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत से परिपूर्ण शहर है। जब मैंने हम्पी के बारे में सुना तो यहाँ जाने की इच्छा दुगुनी हुई। मैंने अपने मित्रजनों के साथ नवंबर महीने में मुंबई से हम्पी जाने का प्लान बनाया। मुंबई से हॉसपेट के लिए रेल की व्यवस्था है। वहाँ से हम्पी 14 कि.मी. की दूरी पर है। हम रात के 10 बजे मुंबई से निकले, सुबह जैसे ही महाराष्ट्र की सीमा खत्म हुई, वैसे ही गर्मी महसूस होने लगी। ट्रेन से बाहर देखा तो बड़ी–बड़ी चट्टानें, मानो किसी महल की दीवारें हों, एक के ऊपर एक रखी हुई थीं। सचमुच, एक अद्‌भुत एहसास था वो। हम्पी के खंडहर एक ऐसे परिदृश्य में बिखरे हुए हैं, जो किसी को भी मंत्रमुग्ध कर दें। विशाल पत्थरों वाली उबड़–खाबड़ पहाड़ियाँ, तुंगभद्रा नदी से घिरा लहरदार भूभाग, ताड़ के पेड़, गन्ने और केले के बागान, धान के खेत और जादुई परिदृश्य प्रस्तुत करने वाले, सफेद बादलों से घिरा नीला आकाश, हम्पी घूमने–फिरने और प्रकृति की अनिश्चितताओं से मंत्रमुग्ध होने के लिए एक जगह है।

शाम के समय हम तुंगभद्रा बांध देखने निकले, जो आदिपुरुष जैसा शांत लगता है। इसके नीचे की ओर एक सुंदर बाग है, जहाँ से 40 रु. की टिकट लेकर, ऊपरी भाग मे टेढ़े–मेढ़े रास्ते से जाते हुये हम ऊपर पहुँचे। ऊपर पहुँच कर दिखाई दिया हमें, तुंगभद्रा बांध। यह बांध अत्यंत सुदर, नयनरम्य, मनमोहक व विशाल रूप में खड़ा, एकदम शांत, जैसे हमें ताक रहा था।

दूसरे दिन सबसे पहले हमने युनेस्को द्वारा विश्व की धरोहर स्थलों में शामिल, विरुपाक्ष मंदिर देखा, जो भगवान शिव को समर्पित है। मंदिर तुंगभद्रा नदी के किनारे हेमकूट पर्वत के पास स्थित है। दक्षिण भारतीय द्रविड़ स्थापत्य शैली में निर्मित इस मंदिर में ईंट और चूने का प्रयोग हुआ है। नौं मंज़िलों और 50 मीटर की ऊँचाई वाला यह भव्य विशाल मंदिर हम्पी बाज़ार क्षेत्र में विराजमान है। यहाँ लक्ष्मी नामक विरुपाक्ष मंदिर की हथिनी है, जिनके लिए हमने प्रसाद हेतु केले लिए लेकिन उस समय वह स्नान करने तुंगभद्रा नदी में थी। यहाँ की एक रोचक बात यह है कि मंदिर के मुख्य द्वार की प्रतिकृति मंदिर के अंदरूनी हिस्से में पूरी तरह उलटी दिखाई देती हैं।

दोपहर में यहाँ से बाहर निकलते ही हमें हम्पी बाज़ार दिखाई दिया। यह विजयनगर साम्राज्य के व्यापार का केंद्र तथा साम्राज्य के गौरवपूर्ण इतिहास का गवाह है। हम्पी बाज़ार के अवशेष अभी भी यहाँ दिखाई देते हैं, जिसमे सड़क के दोनों ओर सीधी कतार में बने हुए समान आकार की स्थाई दुकानें हैं। प्रतिवर्ष नवम्बर माह में यहाँ उत्सव का आयोजन किया जाता है, जिसमें देश–विदेश के लोग शामिल होते हैं।

मुंबई मिंट पत्रिका

तीसरे दिन हम विट्ठल मंदिर देखने के लिए निकले। हम्पी के सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र विट्ठल मंदिर के चित्र को आपने 50 रुपये के नए करेंसी नोट पर देखा होगा। रथ के आकार का यह मंदिर यूनेस्को द्वारा विश्व के धरोहरों में से एक घोषित है। भारत के तीन प्रसिद्ध रथ मंदिरों में कोणार्क के सूर्य मंदिर, महाबलीपुरम मंदिर के बाद इसका स्थान है। इस मंदिर का निर्माण विजयनगर साम्राज्य के राजा कृष्णदेव ने ओड़िसा के सूर्य मंदिर को देखने के बाद करवाया था। यह मंदिर भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ को समर्पित है। पहले इस मंदिर के ऊपर गरुड़ की मूर्ति थी। चार पहियों वाले इस रथ को हाथी खींचते दिखाई देते हैं। इसके आस–पास नृत्य मंडप, लग्न मंडप और बाली–सुग्रीव का युद्ध हुआ था।

बाद में हमने लोटस पैलेस की तरफ कूच की। कमल महल के नाम से प्रसिद्ध यह स्थान राज परिवार की महिलाओं के मनोरंजन करने की जगह थी। यहाँ गर्मी के समय महारानी अपने सखियों से मिलती थी। कमल की पंखुड़ियों–सी बनावट के कारण इस दो मंज़िली इमारत का नाम कमल महल पड़ा।

इसके बाद हमने पहाड़ों की चढ़ाई की (Rock Climbing)। हम्पी रॉक क्लाइम्बिंग करने वाले लोगों के लिए बहुत अच्छा स्थान है। हेमकूट पर्वत के गोल और घुमावदार पत्थर रॉक क्लाइम्बिंग के लिए उपयुक्त हैं। यहाँ देश–विदेश से बहुत लोग इसमें भाग लेने आते हैं। बड़े–बड़े बोल्डर और ग्रेनाइट क्रेग हम्पी में चारों ओर नज़र आते हैं। यहाँ से हम्पी शहर के प्राचीन अवशेष बहुत ही खूबसूरत दिखाई देते हैं।

आखिरी दिन हम हम्पी के हाथी घर गए। ये अच्छी तरह से संरक्षित इमारतें अपनी अनूठी वास्तुकला के लिए जानी जाती हैं, जिसमें गुंबदों–मेहराबों और इसकी जटिल नक्काशीदार दीवारों और स्तंभों सहित हिंदू और इस्लामी शैलियों का मिश्रण है। इसके बाद हजारा राम मंदिर में हमने अनिश्चित संतुलन वाला पत्थर देखा व अंत में हम तुंगभद्रा नदी में गोल तटीय नौका (डूंगि, Coracle) की सवारी करने निकले। तुंगभद्रा के बीच जाने के बाद नाविक ने नाव को गोल–गोल घुमाना शुरू किया जहाँ हमने एक अनोखे अनुभव का आनंद लिया।

अपने देश के प्राचीन और गौरवपूर्ण इतिहास, सुनियोजित व्यापार, कला संस्कृति और बेहतरीन शासन व्यवस्था के लिए मशहूर विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी वास्तव में घूमने और देखने के लिए बहुत ही उत्तम जगह है। यहाँ पूरे परिवार के साथ एक बार ज़रूर जाना चाहिए।

साइबर हमले से कैसे रहें सुरक्षित

नीता मिश्रा
संयुक्त महाप्रबंधक (सू.प्रौ.)

साइबर क्राइम नि:संदेह दुनिया में सबसे तेज़ी से बढ़ते अपराधों में से एक है और यह सभी उद्योगों एवं व्यवसायों को प्रभावित कर रहा है। यदि आप चाहते हैं कि आप या आपकी कंपनी या फर्म का नाम साइबर सुरक्षा उल्लंघन के परिणामस्वरूप हेडलाइन्स में न रहे, तो आपको साइबर सुरक्षा सुझावों के बारे में जागरूक होना होगा।

हालांकि साइबर हमले से सुरक्षित रहना चुनौतीपूर्ण है, फिर भी कई साइबर सुरक्षा सुझाव हैं, जो आपको साइबर हमलों को रोकने में मदद करेंगे। यहाँ, हमने आपके लिए कुछ साइबर सुरक्षा सुझावों की एक सूची संकलित की है।

1. सॉफ्टवेयर को अद्यतन (अपग्रेड) रखें

चाहे घर का लैपटॉप हो या मोबाइल, हमेशा अपने सॉफ्टवेयर के नवीनतम संस्करण का अद्यतन करें ताकि आपकी नई या मौजूदा साइबर सुरक्षा क्षमताओं को बढ़ाया जा सके।

2. संदिग्ध ई–मेल खोलने से बचें

यदि कोई ई–मेल संदिग्ध दिखता है, तो इसे न खोलें क्योंकि यह एक फ़िशिंग ईमेल हो सकता है। कोई आपकी व्यक्तिगत जानकारी तक पहुंच प्राप्त करने के लिए किसी अन्य व्यक्ति या कंपनी की नकल करके ई–मेल कर सकता है। कभी–कभी ई–मेल में संलग्नक या लिंक भी शामिल हो सकते हैं, जो आपके उपकरणों को संक्रमित कर सकते हैं।

3. हार्डवेयर को अप–टू–डेट रखें

पुराने कंप्यूटर हार्डवेयर हाल के सॉफ्टवेयर सुरक्षा उन्नयन (अपग्रेड) का समर्थन नहीं कर सकते हैं। इसके अलावा, पुराने हार्डवेयर, साइबर हमलों का जवाब देने में असमर्थ होते हैं। उन कंप्यूटर हार्डवेयर का उपयोग करना सुनिश्चित करें जो अधिक अद्यतन (अप–टू–डेट) हैं।

4. डेटा एन्क्रिप्ट कर फ़ाइल को सुरक्षित तरीके से साझा करें

यदि आप नियमित रूप से गोपनीय जानकारी साझा करते हैं, तो आपको एक सुरक्षित फ़ाइल साझा करने वाले समाधान का उपयोग शुरू करने की आवश्यकता है। नियमित ई–मेल से संवेदनशील दस्तावेजों को साझा करने से पहले उसे एन्क्रिप्ट करना चाहिए ताकि अनाधिकृत उपयोगकर्ताओं को आपका मूल्यवान डेटा न मिल सके।

5. एंटी–वायरस और एंटी–मालवेयर का उपयोग करें

जब आप वेब से जुड़ते हैं, तब मालवेयर से पूरी तरह से बचना असंभव है, लेकिन आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आपके कंप्यूटर में एक एंटी–वायरस और कम से कम एक एंटी–मालवेयर है।

6. अपने अधिक सुरक्षित और निजी नेटवर्क के लिए वीपीएन का उपयोग करें

अधिक सुरक्षित और निजी नेटवर्क के लिए, वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (वीपीएन) का उपयोग करें। यह आपके कनेक्शन को एन्क्रिप्ट करेगा और आपकी निजी जानकारी को इंटरनेट से भी सुरक्षित रखेगा।

7. क्लिक करने से पहले लिंक चेक करें

हाइपरलिंक पर क्लिक करने से पहले पुनः चेक करना

सबसे अच्छा है। अधिकांश ब्राउज़रों पर, आप लिंक पर होवर करके लिंक (URL) देख सकते हैं। इससे पहले कि आप उन पर क्लिक करें, लिंक की जांच करें।

8. अपने पासवर्ड के साथ आलसी मत होना!

अपनी पासवर्ड सुरक्षित रखने के लिए, अपने पासवर्ड को अधिक कठिन बनाने का प्रयास करें। पासवर्ड बनाने के लिए अंक, विशेष कैरक्टर का प्रयोग करें।

9. आवश्यकता न होने पर ब्लूटूथ को बंद करें

डिवाइस को ब्लूटूथ के माध्यम से हैक किया जा सकता है और बाद में आपकी निजी जानकारी चोरी हो सकती है। यदि आपके ब्लूटूथ का काम न हो तो इसे बंद करके रखें।

10. 2-फैक्टर प्रमाणीकरण सक्षम करें

कई प्लेटफॉर्म अब आपको अपने खातों को सुरक्षित रखने के लिए 2-फैक्टर प्रमाणीकरण सक्षम करने की अनुमति देते हैं। यह सुरक्षा की एक अन्य परत है, जो यह सत्यापित करने में मदद करती है कि यह वास्तव में आप ही अपने खाते तक पहुंच रहे हैं।

11. अपनी मशीनों से एडवेयर निकालें

एडवेयर आपको लक्षित विज्ञापन दिखाने के लिए, आपके बारे में जानकारी एकत्र करता है। अपनी गोपनीयता बनाए रखने के लिए एडवेयर के सभी रूपों को अपने कंप्यूटर से हटा देना सबसे अच्छा है। अपने कंप्यूटर से ऐडवेयर और अवांछित प्रोग्राम को हटाना चाहिए।

12. वेबसाइटों पर HTTPS के लिए डबल-चेक

जब आप किसी वेबसाइट पर जाते हैं, जिसने HTTPS का उपयोग नहीं किया गया हैं, तो यह कोई गारंटी नहीं है कि आपके और साइट के सर्वर के बीच जानकारी का हस्तांतरण सुरक्षित है। डबल-चेक करें कि व्यक्तिगत या निजी जानकारी देने से पहले कोई भी साइट HTTPS का उपयोग कर रही है या नहीं।

13. गैर-सुरक्षा स्थानों में महत्वपूर्ण जानकारी संग्रहीत न करें

बहुत सारी ऑनलाइन वेबसाइटे आपसे आपकी निजी जानकारी संग्रहीत करती हैं, आपको ऐसी जानकारी देने से बचना चाहिये ताकि अनाधिकृत उपयोगकर्ताओं द्वारा एक्सेस नहीं किया जा सके। सार्वजनिक नेटवर्क का उपयोग करने से बचें। आप उन सभी के साथ नेटवर्क साझा कर रहे होते हैं, जो भी उसमे जुड़े हुए हैं।

14. महत्वपूर्ण डेटा बैकअप करें

महत्वपूर्ण डेटा, सुरक्षा उल्लंघन के परिणामस्वरूप खो सकता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप खो जाने के बाद डेटा को पुनर्स्थापित कर सकते हैं, आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आपकी महत्वपूर्ण जानकारी क्लाउड या स्थानीय स्टोरेज डिवाइस पर बैकअप हो।

राजभाषा अधिनियम-1963 की धारा 3(3)

राजभाषा अधिनियम-1963 की धारा 3(3) के अनुसार सभी पत्र द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) जारी किए जाने चाहिए। इस धारा के अंतर्गत निम्नलिखित 14 प्रकार के कागज़ात आते है: संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रेस विज्ञप्तियाँ, संसद में प्रस्तुत की जाने वाली रिपोर्ट, संसद में प्रस्तुत किये जाने वाले सरकारी कागज़ात (रिपोर्ट के अलावा), प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट और राजकीय कागज़-पत्र (जो उच्चतर कार्यालयों को भेजें जाते हैं), संविदाए, करार, लाइसेंस, परमिट, नोटिस, टेंडर नोटिस /फार्म

वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी): परिभाषा और प्रकार

कविता संपतराव मोरे
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (वित्त एवं लेखा)

जब मैंने होटल और कपड़े का बिल देखा, तो उस बिल में मूल कीमत में कुछ अतिरिक्त शुल्क लगाया गया था, तभी मेरे मन में यह बात आई कि ये अतिरिक्त शुल्क है क्या और क्यूँ लगाया गया है? तब पता चला यह एक कर है, जो हमें सरकार को देना होता है। आज हम इस टैक्स के बारे में चर्चा करेंगें।

यह टैक्स 2014 में तत्कालीन वित्त मंत्री अरूण जेटली ने संसद में संविधान संशोधन विधेयक के रूप में पेश किया। मई 2015 में विधेयक लोकसभा में पारित किया गया। 1 जुलाई 2017 को जीएसटी आधिकारिक तौर पर लागू किया गया। लेकिन जीएसटी की पहली चर्चा 2000 से शुरू हुई थी। 1 जुलाई 2017 से सरकार ने राज्य वैट, सीमा शुल्क, केंद्रीय उत्पाद शुल्क और मनोरंजन कर और अन्य अप्रत्यक्ष करों के बदले माल और सेवा कर के तहत एक नई अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था की घोषणा की।

जीएसटी के निम्न प्रकार :

1) सीजीएसटी :

सीजीएसटी का मतलब केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर है। सीजीएसटी किसी राज्य के भीतर माल की आवाजाही पर लगाया जाता है।

उदाहरण: यदि कोई निर्माता पश्चिम बंगाल में किसी वस्तु का उत्पादन करता है और राज्य के भीतर बेचता है, तो एसजीएसटी और सीजीएसटी दोनों लगाए जाएंगे। पहला पश्चिम बंगाल राज्य सरकार के पास जाएगा, जबकि दूसरा केंद्र सरकार के पास जाएगा। इसमें कर को राज्य और केंद्र सरकारों के बीच समान रूप से विभाजित किया जाता है।

2) एसजीएसटी :

राज्य सरकार द्वारा एकत्र किए गए जीएसटी को एसजीएसटी के रूप में जाना जाता है, जो इसकी भौगोलिक सीमाओं के भीतर लेन-देन पर लागू होता है। नई कर व्यवस्था के तहत मनोरंजन कर, वैट और राज्य विक्री कर जैसे पुराने कर गैर-कार्यात्मक हो गए।

एसजीएसटी का मतलब राज्य वस्तु एवं सेवा कर है। यह केवल उत्पादन के लेन-देन मूल्य पर लिया जा सकता है।

एसजीएसटी की विशेषताएँ राज्यवार भिन्न हो सकती हैं क्योंकि प्रत्येक राज्य सरकार के अलग-अलग अधिनियम हैं। हालाँकि कर योग्य घटनाएँ, मूल्यांकन, वस्तुओं और सेवाओं का वर्गीकरण और उपाय जैसी विशिष्ट विशेषताएँ पूरे देश में समान हैं।

इस प्रकार यह कर की नई व्यवस्था के उद्देश्य, 'एक कर, एक राष्ट्र' का प्रतीक है।

3) आईजीएटी :

आईजीएसटी का मतलब इंटीग्रेटड गुड्स एंड सर्विसेस टैक्स है। यह आम तौर पर अंतर्राज्य लेनदेन के दौरान लागू होता है, यानी दो अलग-अलग राज्यों के बीच लेन-देन। यह दो राज्यों के बीच उत्पादों और सेवाओं की आपूर्ति और यहां तक कि निर्यात और आयात पर भी लगाया जाता है। आईजीएसटी अधिनियम के अनुसार इसके संग्रहण की ज़िम्मेदारी केंद्र सरकार की है।

उदाहरण: पश्चिम बंगाल का एक निर्माता महाराष्ट्र में एक

ग्राहक को सामान बेचता है। इस मामले में, आईजीएसटी लेन–देन मूल्य पर लागू होगा।

4) यूटीजीएसटी :

यूटीजीएसटी का मतलब केंद्र शासित प्रदेश वस्तु एवं सेवा कर से है, जो केंद्र शासित प्रदेशों में वस्तुओं और सेवाओं के लेन–देन पर लागू होता है। यह अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दमन दीव, चंडीगढ़ तथा दादरा और नगर हवेली में उत्पादों की आपूर्ति पर लगाया जाता है। यूटीजीएसटी केवल बिना विधान सभा वाले केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू है।

इसलिए दिल्ली, पुडुचेरी और जम्मू और कश्मीर के नवगठित केंद्र शासित प्रदेश, युटीजीएसटी के लिए नहीं बल्कि एसजीएसटी के लिए उत्तरदायी है। यह केंद्र सरकार द्वारा एकत्र किया जाता है। केंद्र शासित प्रदेशों में राज्य वस्तु एवं सेवा कर का विकल्प है।

जीएसटी की विशेषताएँ :

1) जीएसटी एक व्यापक अप्रत्यक्ष कर है। इसके पहले विभिन्न 17 करों को राज्य सरकार और केंद्र सरकार द्वारा लगाया जाता था। लेकिन अब सभी वस्तुओं और सेवाओं के लिए लगने वाले विभिन्न करों की जगह एक एकीकृत कर लगाया जाता है। इस प्रकार जीएसटी से एकीकृत कर व्यवस्था लागू हो गई है।

2) जीएसटी उस राज्य को देय है जिसमें वस्तुओं और सेवाओं का अंततः उपभोग किया जाता है।

3) जीएसटी का आदर्श वाक्य 'एक राष्ट्र, एक कर, एक बाजार' है। जीएसटी व्यवस्था के अनुसार जीएसटी की दर पूरे देश में समान है।

4) जीएसटी केवल उस व्यक्ति /करदाता द्वारा एकत्र किया जा सकता है जो केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम 2017 के तहत पंजीकृत है।

5) जीएसटी में दर संरचना है। वस्तुओं पर जीएसटी दरें 5%, 12%, 18%, 28% और 30% तक शामिल हैं। सेवाओं के लिए जीएसटी 5%, 12 %, 18% और 28% है।

संविधान का अनुच्छेद–343

अनुच्छेद 343 के अंतर्गत

I. संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।

II. संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

सातवें दरवाज़ा का रहस्य: पद्मनाभस्वामी मंदिर

गौरी के. कुट्टी
पर्यवेक्षक (वित्त एवं लेखा)

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ विविध जाति, संप्रदायों, धर्मों के लोगों के साथ-साथ अनेक पूजा स्थल भी हैं। हर स्थल की अपनी मान्यता है। यहां भक्तों की आस्था पूजा स्थलों में विराजमान ईश्वर के प्रति शुद्ध है। कहा जाता है कि भक्तों के लिए ईश्वर का द्वार हमेशा खुला रहता है लेकिन क्या आप दुनिया के उस मंदिर के बारे में जानते हैं, जिसका दरवाज़ा आज तक कोई नहीं खोल पाया है? भारत के केरल राज्य की राजधानी तिरुवनंतपुरम के पूर्वी किले के भीतर स्थित श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर भगवान विष्णु का मंदिर है। यह मंदिर केरल और द्रविड़ वास्तुशिल्प शैली का अनुपम उदाहरण है। इसे दुनिया का सबसे धनी मंदिर माना जाता है। श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर का इतिहास 8वीं सदी से मिलता है। यह विष्णु के 108 पवित्र मंदिरों में एक है, जिसे भारत का दिव्य देसम भी कहते हैं। इस मंदिर के प्रमुख देवता भगवान विष्णु हैं जो शेषनाग पर शयन मुद्रा में विराजमान हैं। त्रावणकोर के प्रसिद्ध राजा, मार्तंड वर्मा ने इस मंदिर का पुन:र्निर्माण कार्य कराया, जिसे आज हम श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर के रूप में जानते हैं। केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम का नाम, श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर के प्रमुख देवता के नाम पर है जिन्हें अनंत (जो सर्प अनंत पर लेटे हैं) भी कहा जाता है। शब्द 'तिरुवनंतपुरम' का शाब्दिक अर्थ है- श्री अनंत पद्मनाभस्वामी की भूमि।

■ प्रतिमा

श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर के प्रमुख देवता की प्रतिमा अपने निर्माण लिए जानी जाती है जिसमें 12008 शालिग्राम हैं जिन्हें नेपाल की गण्डकी नदी के किनारों से लाया गया था। श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर का गर्भगृह एक चट्टान पर स्थित है और मुख्य प्रतिमा, जो लगभग 18 फीट लंबी है, को अलग-अलग दरवाज़ों से देखा जा सकता है।

■ सौंदर्य और वास्तुशिल्प

इस मंदिर का वास्तुशिल्प, पत्थर और कांसे पर की गई नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर के अंदरूनी हिस्सों में सुंदर चित्र और भीति चित्र उकेरे गए हैं। इनमें से कुछ चित्र भगवान विष्णु की शयन मुद्रा, नरसिंह स्वामी (आधा सिंह, आधा नर जो भगवान विष्णु का रूप है), भगवान गणपति और गज लक्ष्मी की छवियाँ हैं। इस मंदिर का ध्वज स्तंभ लगभग 80 फीट ऊंचा है, जिसे स्वर्ण लेपित तांबे की चादरों से ढंका गया है।

पद्मनाभस्वामी मंदिर के 6 दरवाज़ों को खोला गया था, तो उसमें से बेशुमार मात्रा में खज़ाने की प्राप्ति हुई थी। हालांकि सातवें दरवाज़े को खोलने को लेकर काफी विवाद हुआ। इसे देखते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने उस दौरान इस मामले में हस्तक्षेप किया और सातवें दरवाजे को खोलने पर रोक लगा दी। कहा जाता है कि पिछले 6 दरवाज़ों को खोलने पर जितना खज़ाना निकला था, उससे भी कहीं अधिक खज़ाना सातवें दरवाज़े के भीतर मौजूद है।

सातवें दरवाज़े पर एक सांप के आकार का चित्र बना हुआ है। स्थानीय लोगों के अनुसार अगर सातवें दरवाज़े को खोला गया तो कई तरह की अशुभ घटनाएं होंगी। कहा जाता है कि एक बार किसी व्यक्ति ने इस दरवाज़े को खोलने का प्रयास किया, लेकिन उसी समय उसको ज़हरीले सांप ने काट लिया था। कई लोगों की मान्यता है कि खज़ाने की रक्षा सांप करते हैं। इस दरवाज़े पर कोई ताला नहीं लगा हुआ है।

मान्यताओं के अनुसार पद्मनाभस्वामी मंदिर के सातवें दरवाज़े को गरुड़ मंत्र के उच्चारण करने के बाद ही खोला जा सकता है। यदि मंत्र पढ़ते समय पुजारी से कुछ गलती होती है, तो उसी समय उसकी मृत्यु हो सकती है। इस दरवाज़े को कोई सिद्ध पुरुष ही मंत्रोच्चार करके खोल सकता है। हालांकि इस बात का पता नहीं चल पाया है कि मंदिर के सातवें दरवाज़े के भीतर कितना खज़ाना छिपा हुआ है। इस वजह से पद्मनाभस्वामी मंदिर का सातवां दरवाज़ा आज भी रहस्य का विषय बना हुआ है। अब तक इसके राज़ से पर्दा नहीं उठ पाया है।

पैदल चलने की परिकल्पना: सैर से हाइकिंग तक!

गीता उदयावर
वरिष्ठ कार्यालय सहायक
(विपणन)

हमारे बड़े बुजुर्ग कहते हैं, सुबह जल्दी उठ कर सैर करने जाने से सेहत अच्छी रहती है। नंगे पाँव घास पर चलने से आँखों की रोशनी बेहतर होती है। आजकल तो फिटनेस एक्स्पर्ट्स द्वारा 10,000 कदम चलने के टार्गेट तक दिये जाते हैं। पैदल चलना हमारे जीवन की एक सामान्य क्रिया है, लेकिन इसके मायने और रूप कई बार बदले हैं।

अठारहवीं शताब्दी के दौरान यूरोप में लोगों ने आनंद के लिए पैदल चलना शुरू किया। धार्मिक तीर्थयात्राएँ तो बहुत पहले से हमारे यहाँ होती आ रही हैं, लेकिन उनमें विशिष्ट धर्मों से जुड़े आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए लंबी दूरी तक पैदल चलना होता है।

पहले के समय में पैदल चलना आम तौर पर गरीबी का संकेत देता था और इसे आवारागर्दी से भी जोड़ा जाता था। पिछली शताब्दियों में धार्मिक तीर्थयात्राओं के हिस्से के रूप में लंबी पैदल यात्राएँ की जाती थीं और यह परंपरा दुनिया भर में जारी है। लेकिन अब हाइकिंग युवाओं की एक प्रचलित पैदल यात्रा के रूप में उभर रही है। हाईकिंग एक मौलिक आउटडोर गतिविधि है, जिसमें कई खूबसूरत जगहों पर ज़मीनी मार्ग से होते हुए भी पहुंचा जा सकता है। उत्साही लोग प्रकृति का अनुभव करने के लिए हाईकिंग को सबसे अच्छा तरीका मानते हैं। हाइकिंग का मतलब मनोरंजन के उद्देश्य से किसी पगडंडी पर या पगडंडी से हटकर घूमना है। यह विशेष रूप से घने जंगलों, झाड़ियों या पहाड़ों पर चलने को संदर्भित करती है। अब तो कभी-कभी हाईकर दुर्लभ या लुप्तप्राय प्रजातियों को देखने का आनंद लेने भी जाते हैं।

मैं तो हर वर्ष पहाड़ों के असीम दृश्य को देखने हाइकिंग करने जाती हूँ। आप कब चल रहे हैं?

कविता

अमर अजीत लहरिया
कनिष्ठ बुलियन सहायक
(बुलियन)

❊ जिंदगी ❊

न चादर बड़ी कीजिये,
न ख़्वाईशे दफ़न कीजिये,
चार दिन की ज़िंदगी है,
बस चैन से बसर कीजिये,

न परेशान किसी को कीजिये,
न हैरान किसी को कीजिये,
कोई लाख गलत भी बोले,
बस मुस्कुरा कर छोड़ दीजिये,

न रूठा किसी से कीजिये,
न झूठा वादा किसी से कीजिये,
कुछ फुरसत के पल निकालिये,
कभी खुद से भी मिला कीजिये,

असम्भव सा लगता होगा कभी, दरियाओं को पार करना।
पर किसी की सोच और प्रयासों ने, इसे भी संभव बना दिया।

महिलाओं की प्रगति, देश की प्रगति

स्वप्नाली मोरे
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (वित्त एवं लेखा)

पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं ने हर क्षेत्र में प्रगति की है। यह प्रगति कई उदाहरणों से स्पष्ट होती है, जो न केवल महिलाओं की स्थिति में सुधार दर्शाते हैं, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी योगदान देते हैं।

❋ शिक्षा में प्रगति

भारत में, पिछले दस वर्षों में महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सुधार हुए हैं। भारत सरकार ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी योजनाएं शुरू की हैं, जिसका उद्देश्य लड़कियों की शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार करना है। उदाहरण के लिए, 2014 में शुरू की गई इस योजना के तहत, कई राज्यों में लड़कियों के नामांकन दर में वृद्धि हुई है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी महिलाओं की शिक्षा में प्रगति हुई है। मलाला यूसुफजई का उदाहरण लें, जो पाकिस्तान की शिक्षा अधिकार कार्यकर्ता हैं और उन्हें 2014 में नोबेल शांति पुरस्कार मिला। उनकी कहानी ने दुनिया भर में लड़कियों की शिक्षा के महत्व को उजागर किया है।

❋ स्वास्थ्य में सुधार

महिलाओं के स्वास्थ्य में भी पिछले दस वर्षों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। भारत में, 'जननी सुरक्षा योजना' और 'प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान' जैसी सरकारी योजनाएं शुरू की गई हैं, जो गर्भवती महिलाओं को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करती हैं। इन योजनाओं के परिणामस्वरूप, मातृ मृत्यु दर में कमी आई है और नवजात शिशुओं की स्वास्थ्य स्थिति में सुधार हुआ है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और संयुक्त राष्ट्र ने भी महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए कई पहल की हैं। उदाहरण के लिए, अफ्रीका में HIV/AIDS की रोकथाम के लिए किए गए प्रयासों ने महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार किया है।

❋ रोज़गार में प्रगति

भारत में महिलाओं की रोज़गार दर में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। विशेष रूप से आईटी और सेवा क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। उदाहरण के लिए, इंदिरा नूई, जो पेप्सिको की CEO रही हैं, ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में महिलाओं की क्षमता को प्रदर्शित किया है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, शेरिल सैंडबर्ग का नाम भी उल्लेखनीय है, जो फेसबुक की सीओओ रही हैं। उन्होंने महिलाओं के नेतृत्व में भूमिका को मजबूत करने के लिए 'लीन इन' आंदोलन शुरू किया, जो महिलाओं को करियर में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

❋ राजनीति में महिलाओं की भागीदारी

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में भी पिछले दशक में वृद्धि हुई है। भारत में, पंचायती राज व्यवस्था के तहत महिलाओं के लिए 33% आरक्षण ने उन्हें स्थानीय शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर दिया है। अब तो संसद में भी महिलाओं के लिए 33% आरक्षण का बिल पारित किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, कई महिलाएं जैसे कि एंजेला मर्केल, जो जर्मनी की चांसलर रही हैं, और जैसिंडा अर्डर्न, जो न्यूज़ीलैंड की प्रधानमंत्री हैं, ने अपने देशों के नेतृत्व में महत्वपूर्ण भूमिका

निभाई है। ये महिलाएं न केवल अपने देशों के विकास में योगदान दे रही हैं, बल्कि वैश्विक राजनीति में भी एक महत्वपूर्ण आवाज़ बन गई हैं।

❋ सामाजिक सुधार

पिछले दस वर्षों में महिलाओं की प्रगति ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में गहरी छाप छोड़ी है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं ने न केवल अपनी स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि महिलाओं की प्रगति एक निरंतर प्रक्रिया है, जो समाज में समता और न्याय के सिद्धांतों को मजबूत करती है। आने वाले वर्षों में भी यह प्रगति जारी रहेगी, जिससे महिलाओं को और भी अधिक अवसर मिलेंगे और वे समाज के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेंगी।

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में 8 मार्च, 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, एक खास थीम 'इन्वेस्ट इन विमेन: एसकलरेट प्रोग्रेस' (महिलाओं में निवेश करें: प्रगति की गति बढ़ाएं) के साथ मनाया गया। महिला दिवस के इस अवसर पर टकसाल में उद्योगिनी प्रतिष्ठान द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य महाप्रबंधक श्री सुधीर साहू जी की उपस्थिति में डॉ. निधि मैडम के करकमलों से किया गया। इस संबंध में सभी महिलाओं को सम्मानित करते हुए टकसाल, मुंबई द्वारा हिंदी भाषा में एक वीडियो बनाई गई, जिसमें महिलाओं को अपने अधिकार पाने के लिए संघर्ष की कहानी बताई गई।

इसके साथ ही मुख्यालय द्वारा इस दिन महिलाओं को जागरूक करने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा 'लैंगिक उत्पीड़न से बचाव और सशक्तिकरण' विषय पर व्याख्यान दिया गया। टकसाल, मुंबई की महिला कर्मचारियों की इसमें उत्साहपूर्ण प्रतिभागिता रही। वरिष्ठ प्रबंधन ने सभी महिला कर्मचारियों को महिला दिवस की बधाई देते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया।

कविताएँ

पुरेन्द्र चिंतामणि दूबे
वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक (धातु–परीक्षण)

'स्वप्न और भ्रष्टाचार'

सपने में चल रही थी, घड़ी की सुई
फिर मेरी मुलाकात भ्रष्टाचार से हुई

मैंने पूछा भाई भ्रष्टाचार, ये क्या कर रहे हो ?
पिछले 76 वर्षों से इस देश को लगातार चर रहे हो,

भ्रष्टाचार तुंरत बोला मुझसे
ऐसा न कहो मित्र,
मैं इस देश के भ्रष्ट डॉक्टर, इंजीनियर और
नेताओं का कर्णधार हूँ,

मेरी भौंहें तन गई, चेहरा गुस्से से
लाल हो गया, मैं बोला,
ये देश सुभाष, भगत, आज़ाद का है,
ये देश राम, कृष्ण के अवतार का है,

जिस दिन इस देश का नौजवान जागेगा,
भ्रष्टाचार, तू तो क्या तेरा बाप भी
मेरा देश छोड़कर भागेगा।

20-20 वर्ल्ड कप 2024 का रोमांचक फाईनल

भारत ने टॉस जीतकर बल्लेबाज़ी का फैसला लिया,
रोहित–कोहली की जोड़ी ने बल्ला हाथों में थाम लिया,

अफ्रीकी गेंदबाज़ों ने फिर अपना कहर भरपाया,
झटके तीन विकेट हमारे, हमारा मनोबल गिराया,

तब संकटमोचक किंग कोहली ने अपना अर्द्धशतक बनाया,
अक्षर और दूबे ने भी किंग कोहली का जमकर साथ निभाया,

भारत के स्कोर को 176 तक पहुँचाया,
अब बारी थी, वर्ल्ड कप वापस भारत लाने की,

बुम–बुम बुमराह, अर्शदीप ने भी किया खूब कमाल,
हार्दिक पंड्या ने भाई सही समय पर किया धमाल,

सूर्यकुमार ने जब मिलर का कैच पकड़ लिया,
मानो, उसी वक्त भारत ने वर्ल्ड कप जकड़ लिया,
13 साल बाद फिर बनी साथ में दिवाली–ईद,

भारतीय शेरों ने बढ़ाई फिर तिरंगे की शान,
हम सभी हैं भारतीय, भारत हमारा महान,

ऑलिंपिक खेलों का इतिहास

अंशुल कुमार
कनिष्ठ कार्यालय सहायक (हिन्दी)

हम लोगों ने बहुत सारी खेल प्रतियोगिताओं का नाम सुना है, जिसमें से एक है ऑलिंपिक प्रतियोगिता। यह दुनिया की सबसे पुरानी खेल प्रतियोगिता मानी जाती है। ऑलिंपिक खेल के अंतर्गत बहुत सारे अलग–अलग खेल खेले जाते हैं। इसमें दुनियाभर के चुने हुए खिलाड़ी भाग लेते हैं। इस खेल में हिस्सा लेना और जीतना पूरे दुनियाभर में सम्मान और गौरव की बात है। यह खेल चार वर्ष के अंतराल में खेला जाता है। ऑलिंपिक खेलों के लिए चुना जाना खिलाड़ियों के लिए गौरव की बात होती है। खिलाड़ी खेलों में मेडल्स जीतकर देश का नाम रौशन करते हैं।

पिछली बार, 2020 में हुई ऑलिंपिक प्रतियोगिता में भाला फेंक प्रतियोगिता में नीरज चोपड़ा को स्वर्ण पदक हासिल हुआ। प्राचीन समय में, भाला फेंक को निशानेबाज़ी के लिए एक आवश्यक कौशल माना जाता था, जिसका उपयोग शिकार और अन्य छोटे युद्धों के लिए किया जाता था। इस महत्वपूर्ण कौशल को पहचान देने के लिए गुप्त साम्राज्य के समुद्रगुप्त काल में जारी की गई स्वर्ण मुद्रा में राजा के हाथ में भाला पकड़े हुए सिक्का उत्कीर्णित है।

प्राचीन खेलों का आयोजन 1200 साल पूर्व योद्धा–खिलाड़ियों के बीच हुआ करता था। पुराने समय में शांतिपूर्ण अंतराल के दौरान योद्धाओं के बीच प्रतिस्पर्धा के साथ खेलों का विकास हुआ। शुरुआती दौर में दौड़, मुक्केबाज़ी, कुश्ती और रथों की दौड़ सैनिक प्रशिक्षण का हिस्सा हुआ करते थे। इनमें से सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वाले योद्धा प्रतिस्पर्धी खेलों में अपना दम दिखाते थे। विश्व में सबसे पहले ऑलिंपिक खेलों का आयोजन एथेंस (ग्रीस) में 1896 में हुआ था, जिसमें 14 देशों के 241 एथलीटों ने 43 प्रतियोगिताओं में भाग लिया था।

ओलंपिक खेलों का चिन्ह, आपस में जुड़े 5 छल्ले हैं, जो कि पांच प्रमुख महाद्वीप (एशिया, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया या, युरोप और अफ्रीका) को दर्शाते हैं। इन छल्लों को पिएर द कुब्रदीं ने डिज़ाइन किया था, जिन्हें आधुनिक ओलिंपिक गेम्स का सह–संस्थापक माना जाता है। उन्होंने 1912 में इसका लोगो तैयार किया था और इन्हें 1913 में स्वीकार करके सार्वजनिक किया गया था।

ऑलिंपिक ज्वाला या मशाल ऑलिंपिक खेलों का एक प्रतीक है। बहुत समय पहले ओलंपिया, ग्रीस में प्राचीन ऑलिंपिक के आयोजन के समय खेलों के सफलतापूर्वक समापन के लिए अग्नि देवता की प्रार्थना की जाती थी तथा एक मशाल भी जलाई जाती थी। यह परंपरा आज भी जारी है। मशाल की लौ पवित्र मानी जाती है, क्योंकि सूर्य की किरणें जब लेंस से छन कर निकलती हैं, तो इसमें अग्नि प्रज्जवलित होती है, जो मशाल को रोशन करती है। इसे फिर कलश में रखा जाता है और उस स्टेडियम में ले जाया जाता है, जहां पहली बार ऑलिंपिक खेल हुए थे। यह मशाल

ऑलिंपिक खेलों के आगाज़ से पहले अपनी यात्रा खत्म कर मेजबान शहर में पहुंचती है। इस वर्ष भारत से टॉर्च बीयरर के रूप में 2008 के ऑलिंपिक स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा को चुना गया।

भारत ने ऑलिंपिक में पहली बार 1900 के पेरिस ऑलिंपिक खेलों में हिस्सा लिया, जहां नॉर्मन प्रिचर्ड देश के एक मात्र प्रतिनिधि के तौर पर शामिल हुए। उन्होंने 200 मीटर स्प्रिंट और 200 मीटर बाधा दौड़ (हर्डल रेस) में दो रजत पदक जीते। इसके बाद भारत ने कई खेलों में हिस्सा लेने के लिए अपना पहला दल 1920 के एंटवर्प ऑलिंपिक में भेजा, जहां पांच एथलीटों (एथलेटिक्स में तीन और रेसलिंग में दो पहलवानों) ने हिस्सा लिया था। 1928 में एम्स्टर्डेम ऑलिंपिक से भारतीय हॉकी के स्वर्णिम युग की शुरुआत हुई। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने दिग्गज हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के नेतृत्व में 29 गोल किए और एक भी गोल खोए बिना उन्होंने अपना पहला ऑलिंपिक स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने 1932 के लॉस एंजिल्स ऑलिंपिक और 1936 के बर्लिन ऑलिंपिक में भी स्वर्ण पदक जीतते हुए गोल्डन हैट्रिक पूरी की और दुनिया की सबसे प्रभावशाली हॉकी टीम के रूप में खुद को साबित करने के लिए एक बार फिर से इस उपलब्धि को दोहराने का काम किया।

साथ ही बॉक्सर विजेंदर सिंह और पहलवान सुशील कुमार ने भी कांस्य पदक जीते। 1952 के बाद यह पहला मौका था जब भारत ने एक ही ऑलिंपिक में कई पदक जीते।

2012 के लंदन ऑलिंपिक में साइना नेहवाल ने बैडमिंटन में भारत का पहला ओलंपिक पदक जीता। इसके बाद सुशील कुमार ने अपना दूसरा ऑलिंपिक पदक जीता, जबकि गगन नारंग, विजय कुमार, मैरी कॉम और योगश्वर दत्त ने भी उस संस्करण में पदक जीतते हुए भारत की झोली में कुल छह पदक डाले और यह पहली बार था जब ग्रीष्मकालीन खेलों में भारत ने सबसे अधिक पदक हासिल किए।

भारतीय खेलों के लिए गौरव का ऐतिहासिक पल सिडनी 2000 ऑलिंपिक में आया जब कर्णम मल्लेश्वरी ने कांस्य पदक जीता। वे ऑलिंपिक पदक जीतनेवाली एकमात्र भारतीय भारोत्तोलक हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वह ऑलिंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी भी बनी। रियो 2016 में, सिर्फ पीवी सिंधु और साक्षी मलिक ही भारत के लिए पदक जीत सकीं, यह पहला मौका था जब पदक तालिका में सिर्फ महिलाओं ने बाजी मारी।

इनके अलावा मीरा बाई चानू ने महिला 49 किग्रा. भारत्तोलन (वेटलिफ्टिंग) में रजत पदक, लवलीना बोरगोहेन ने महिला वेल्टरवेट (64-69 किग्रा.) में कांस्य पदक, रवि कुमार दहिया ने पुरुष फ्रीस्टाइल 57 क्रिग्रा. कुश्ती में रजत पदक, भारतीय हॉकी टीम ने पुरुष हॉकी में कांस्य पदक, बजरंग पुनिया ने पुरुष 65 किग्रा. कुश्ती में कांस्य पदक जीता। इस अभियान के स्टार निसंदेह नीरज चोपड़ा थे, जिन्होंने भाला फेंक में भारत का पहला ट्रैक–एंड–फील्ड स्वर्ण पदक जीता था। बता दे कि बीजिंग 2008 में अभिनव बिंद्रा के बाद यह भारत का पहला स्वर्ण पदक था। टोक्यो 2020 भारत का सबसे सफल ओलंपिक साबित हुआ है, क्योंकि इसमें उन्होंने सात पदक के साथ वापसी की।

भारत के जांबाज खिलाड़ियों ने पेरिस ऑलिंपिक 2024 में परचम लहराया।

भारत ने पेरिस ऑलिंपिक 2024 में कई ऐतिहासिक उपलब्धियां प्राप्त की हैं। भारत ने इस ऑलिंपिक में कई शानदार रिकॉर्ड भी बनाए। भारत ने 6 पदकों के साथ अपना अभियान खत्म किया। जिसमें से एक रजत पदक और पांच कांस्य पदक शामिल रहे।

1. भारत की स्टार शूटर मनु भाकर ने पेरिस ऑलिंपिक 2024 में दो कांस्य पदक जीतकर इतिहास रचा। मनु भाकर पेरिस ऑलिंपिक में महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में ऐतिहासिक कांस्य पदक जीतने में सफल रहीं।

2. स्टार शूटर सरबजोत सिंह ने मनु भाकर के साथ मिलकर पेरिस ओलिंपिक में कांस्य पदक जीता है। मनु भाकर और सरबजोत सिंह के साथ 10 मीटर एयर पिस्टल मिक्स्ड टीम इवेंट में इतिहास रचते हुए भारत को दूसरा कांस्य पदक दिलाया। मनु समापन समारोह में अनुभवी हॉकी गोलकीपर पी आर श्रीजेश के साथ भारत की ध्वजवाहक बनी।

3. पेरिस ओलिंपिक 2024 में नीरज चोपड़ा ने रजत पदक जीता। उन्होंने ओलिंपिक स्वर्ण पदक को जीतने की अपनी तरफ से पूरी कोशिश की लेकिन वह इसे हासिल करने में असफल रहे और 89.45 मीटर की सर्वश्रेष्ठ भाला फेंक के साथ उनके हाथ रजत पदक आया। नीरज चोपड़ा ओलिंपिक में दो पदक जीतनेवाले भारत के चौथे एथलीट बन गए हैं।

4. पेरिस ओलिंपिक 2024 में निशानेबाज़ी में स्वप्निल कुसाले ने 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन में भारत को कांस्य पदक दिलाया। कुसाले ने आठ निशानेबाजों के फाइनल में 451.4 का कुल स्कोर बनाया।

5. भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने पेरिस ओलिंपिक 2024 में कांस्य पदक जीतनेवाली भारतीय हॉकी टीम ने दो स्थान की छलांग लगाकर पांचवां स्थान हासिल किया। ओलिंपिक में हरमनप्रीत सिंह ब्रिगेड ने शानदार प्रदर्शन किया। भारत ने ओलिंपिक में लगातार दूसरी बार कांस्य पदक जीता।

6. पेरिस ओलिंपिक 2024 में भारत के अमन सहरावत ने कुश्ती में पुरुषों के 57 किग्रा. फ्री स्टाइल में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक जीता। पेरिस ऑलिंपिक 2024 में हरियाणा के झज्जर ज़िले के बीरोहार के रहने वाले अमन सहरावत ने पेरिस 2024 में पुरुषों की 57 किग्रा फ्रीस्टाइल कुश्ती स्पर्धा में भारत के लिए लगातार दूसरा ओलंपिक पदक जीता। भारतीय पहलवान ने कांस्य मुकाबले में प्यूर्टो रिको के डेरियन क्रूज़ को 13-5 से हराया। कांस्य पदक मैच से पहले, अमन ने पेरिस ओलंपिक में सेमीफाइनल तक का सफर तय किया था, जिसमें पूर्व विश्व चैंपियन अल्बानिया के जेलिमखान अबकारोव पर जीत भी शामिल थी। 21 साल और 24 दिन की उम्र में अमन सहरावत ओलंपिक में भारत के सबसे कम उम्र के पदक विजेता बन गए।

चारधाम यात्रा: एक अविस्मरणीय अनुभव

दीपक वसंत फुंडे
फोरमैन (डाई)

भारतीय पौराणिक ग्रंथों और मान्यताओं के अनुसार यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम के दर्शन से मोक्ष प्राप्ति होती है। यह चार धाम भारत की तपोभूमि–देवभूमि कहलाने वाले 'उत्तराखण्ड' राज्य में हिमालय पर्वत के सर्वोच्च चार शिखरों पर बसे हुए हैं। हमारे देश में नदियों को माता कहा जाता है, इसलिए यमुनोत्री–गंगोत्री, माता यमुना तथा माता गंगा (नदी) का संगम स्थान माना जाता है। हमारे धार्मिक पुराणों के अनुसार केदारनाथ धाम महादेव शिवशंकर के आत्मलिंग का अत्यंत पवित्र तथा पौराणिक धार्मिक स्थान है और बद्रीनाथ भगवान विष्णुनारायण जी का निवास स्थान माना जाता है। इस धाम के कपाट (दरवाज़े) अक्षय तृतीया के दिन धार्मिक विधान के साथ खुलते हैं और दिवाली के दिन यह कपाट शास्त्रवत विधी के साथ छः महीनों के लिए बंद किए जाते हैं। हर वर्ष भक्तों की संख्या बढ़ती जाती है। कई साधू–संत महीनों पैदल यात्रा करके यहाँ आते है।

इस यात्रा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण करना अनिवार्य है। इस यात्रा के लिए यात्री सड़क मार्ग से टेम्पो, बस, कार तथा टैक्सी से हरिद्वार से यात्रा प्रारंभ करते हैं। यहाँ गंगास्नान एवं गंगापूजन करके यात्रा का आरंभ किया जाता है। हैलीकॉप्टर की सुविधा भी उपलब्ध होती है। कई वर्षों की प्रतीक्षा के बाद मुझे मेरे परिवार के साथ इस वर्ष चारधाम यात्रा करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। मुंबई टकसाल के एल.टी.सी. सुविधा का लाभ लेकर मैंने चारधाम यात्रा की तैयारी की।

26 मई, 2024 को मुंबई से नई दिल्ली तक राजधानी ट्रेन की यात्रा करके हम दूसरे दिन 27 मई, 2024 को नई दिल्ली पहुंचे, हमारा 26 यात्रियों का समूह था। वहाँ से पांच घंटे की बस यात्रा करके शाम में हरिद्वार पहुंचे। शाम में गंगा नदी के जल से पवित्र होकर हरिदर्शन करके, गंगा मैया का दर्शन करके आरती का लाभ लिया।

दूसरे दिन सुबह 2:00 बजे हमने यमुनोत्री के लिए प्रस्थान किया। 40 कि.मी. तथा दो घंटों का सफर तय करके जानकीचही पहुंचे। वहाँ से हमने 7 कि.मी. की चढ़ाई का सफर पैदल और घोड़े से किया। 3-4 घंटे की यात्रा के बाद हम यमुनोत्री धाम पहुंचे। वहाँ यमुना नदी के पानी से शुद्ध होकर सूर्यकुंड में गर्मपानी में स्नान के बाद पवित्र होकर यमुना माता मंदिर जाकर दर्शन किए। यमुना माता की नीली मूर्ती बहुत ही तेजस्वी और भक्तिभावपूर्ण थी। भगवान सूर्य की पुत्री और शनि महाराज और यम देवता की बहन के रूप में माता यमुनोत्री का पूजन होता है। यह स्थान पौराणिक ग्रंथों के अनुसार असित मुनि का तपस्या एवं निवास स्थान माना गया है। उन्होंने तप करके यमुना माता को प्रसन्न किया और यमुना माता ने दर्शन दिये। यहाँ गर्म पानी में चावल पका कर प्रसाद के रूप में ग्रहण किए जाते हैं। 19वीं सदी में जयपुर राज घराने ने इस मंदिर का पुनर्निर्माण किया। शाम में हम अपने निवास स्थान वापस आये और विश्राम किया ।

दूसरे दिन हमने प्राकृतिक प्राचीन प्रकटेश्वर पंचानन महादेव मंदिर, काशी विश्वनाथ मंदिर अन्नपूर्णा माता मंदिर और भैरव मंदिर के दर्शन किए। यहाँ लगभग 365 मंदिर हैं। शाम में उत्तरकाशी में ठहर गये।

मुंबई मिंट पत्रिका

सुबह जल्दी हमने गंगोत्री धाम की यात्रा शुरू की। रास्ते में हमने बड़े–बड़े पर्वत, नदी, बाग–बगीचों का नैसर्गिक आनंद लिया, फिर गंगामाता के उद्‌गम स्थान गंगोत्री पहुंचे।

यात्री गंगाघाट पर स्नान करके गंगामैया के दर्शन करते हैं। यहां मंदिर में हमने माता गंगा के पवित्र तथा स्वर्ण मूर्ति के दर्शन किये। गंगामंदिर बहुत सुंदर है। इस मंदिर का पुनर्निर्माण गोरखा कमांडर अमर सिंह थापा द्वारा 19वीं शताब्दी के शुरुआत में किया गया था। 1990 में सरकार ने यहाँ मंदिर तक पक्की सड़क बनायी।

अगले दिन हम उत्तर काशी से केदारनाथ धाम की ओर चल पड़े। रास्ते में ऊँचे–ऊँचे पर्वतों के बीच बसाया गया टिहरी बाँध देखने का मौका मिला। यमुनोत्री–गंगोत्री धाम और केदारनाथ–बद्रीनाथ धाम के बीच में यह टिहरी बाँध है। विकसित तथा समृद्ध भारत का अद्‌भुत नज़ारा हम देख रहे थे। भारत का सबसे ऊँचा और दुनिया का 92वां ऊँचा बांध है। इस परियोजना का आरंभ 1960 में हुआ था। यहाँ के टिहरी गांव विस्थापन को लेकर बड़ा संघर्ष हुआ, जिसका नेतृत्व सुंदरलाल बहुगुणा जी ने किया। उन्होंने 74 दिनों तक अनसन किया। जब विभाग यहाँ के जंगलों में बसे पेड़ों को काटने आये, तभी यहाँ के लोगो ने पेड़ों को गले लगाकर, यह आंदोलन 'चिपको आंदोलन' के नाम से संपूर्ण भारत में लोकप्रिय और मशहूर हुआ। आखिरकार समझौता हुआ और इस महत्वाकांक्षी परियोजना की शुरूआत की गयी। टिहरी गाँव दूसरी जगह बसाया गया। यह बाँध भगीरथ (गंगा) नदी पर जल–विद्युत परियोजना के रूप में बसा है। इससे संपूर्ण उत्तर भारत को बिजली और पानी की आपूर्ति होती है। यह परियोजना साल 2025 तक पूरी होगी। इस यात्रा में हमने ईश्वर भक्ति के साथ राष्ट्रभक्ति का भी अनुभव लिया।

वहाँ से हम शाम तक उत्तरकाशी पहुंच गये। रात को 12.00 बजे हमने गौरीकुंड के लिए प्रस्थान किया और 3.00 बजे केदारनाथ धाम की यात्रा प्रांरभ की। लगभग 20 कि.मी. की चढ़ाई है। यात्री घोड़ा, पालखी या पैदल यात्रा कर सकते हैं। पांच घंटे घोड़े पर यात्रा करके हम सुबह केदारनाथ धाम पहुंच गये। इसके बाद आठ घंटे कतार में खड़े रहने के बाद, शाम को हमने केदारनाथ महादेव के दर्शन किए। हम अपने जीवन में केदारनाथ धाम के उस अद्‌भुत दृश्य को कभी नहीं भूल सकते। इस भावना को व्यक्त करने के लिए शब्द पर्याप्त नहीं है। फिर हमने मंदिर के पीछे 'भीम शिला' के दर्शन किए जिस प्रचंड शिला के कारण वर्ष 2013 में आयी आपदा में इस मंदिर का बचाव हुआ था। हमने उस भयंकर आपदा को भी कुछ क्षण याद किया।

पौराणिक मान्यता के अनुसार महाभारत काल में पांडव महादेव को खोजते हुए यहाँ पहुँचे। महादेव ने बैल का रूप धारण किया था। पाण्डवो को देखते ही महादेव इस ज़मीन में लुप्त होने लगे, तभी भीम ने उनके आधे शरीर को पकड़ के रखा इसलिए यहाँ बैल के ऊपरी हिस्से की तरह शिवलिंग स्थापित है। ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण पांडवो ने किया है। बारह जोतिर्लिंग में से यह एक स्थान है। 300 वर्षों तक यह मंदिर बर्फ में

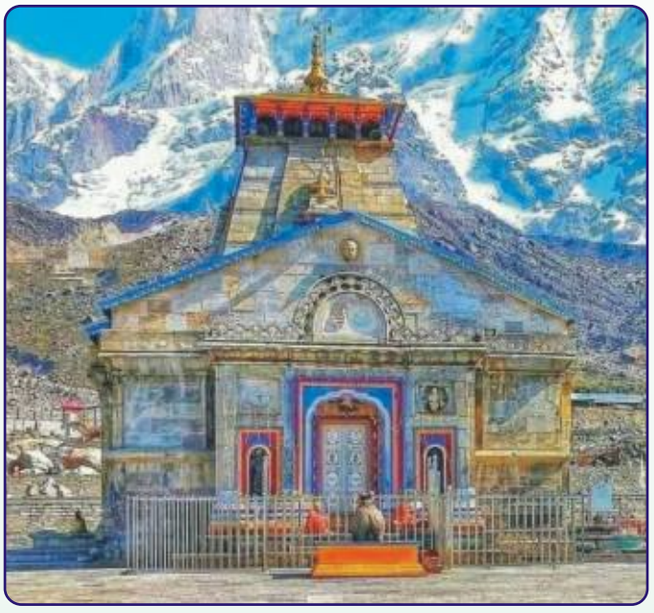

ढका हुआ था। फिर शंकराचार्य ने पौराणिक ग्रंथों का अभ्यास करके, इस मंदिर की खोज की। श्री शंकराचार्य का मंदिर भी यहां बन रहा है। शून्य के नीचे तापमान की कड़कड़ाती ठंड में रातभर रुकने के बाद हमने सुबह जल्दी अपनी वापसी की यात्रा शुरू की।

दूसरे दिन हम सुबह बद्रीनाथ विशाल धाम की ओर चल पड़े।

'जो जाये बद्री ओ ना आये ओद्रि' मतलब ऐसी मान्यता है कि, बद्रीनाथ दर्शन के बाद पुनः मनुष्य जन्म नहीं लेना पड़ता। बद्रीनाथ धाम को सृष्टि का आठवा बैकुंठ माना जाता है। नीलकंठ पर्वत पर यह पौराणिक स्थान है। पहले यह शिव–पार्वती का निवास स्थान था। बाद में भगवान विष्णु ने यह स्थान महादेव से प्राप्त किया। भगवान विष्णु ने यहाँ घोर तपस्या की, उस समय माता लक्ष्मी ने बेर के वृक्ष का रूप लेकर भगवान विष्णु के ऊपर छत्र धारण किया। तपस्या समाप्त होने के बाद भगवान विष्णु ने देखा उनके ऊपर बद्री पेड की छत्र छाया में उनकी तपस्या सफल

हुई। तब भगवान विष्णु बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि यह स्थान 'बद्रीनाथ' धाम के नाम से युगों–युगों तक जाना जायेगा।

दोपहर को हम वापस अपने विश्राम स्थान पिपलकोटी पहुँचे, वहाँ से फिर से हरिद्वार हो कर 7 जून, 2024 को नई दिल्ली से मुंबई की ओर चल पड़े। यह यात्रा हम सभी यात्रियों के जीवन काल में हमेशा के लिए स्मरण में रहेगी।

दैनिक उपयोग में आने वाली टिप्पणियां

- ☞ **ज़रूरी कार्रवाई कर दी गई है।**
  Needful has been done.
- ☞ **मांगी गई/आवेदित आकस्मिक छुट्टी दे दी जाए।**
  Casual leave applied for may be granted.
- ☞ **हमसे इसका सम्बन्ध नहीं है।**
  We are not concerned with this.
- ☞ **इसे आवश्यक कार्रवाई के लिए..... को भेजा जाए।**
  This may be passed on to.....for necessary action.
- ☞ **कागज़/पत्र इसके साथ भेजे जा रहे हैं।**
  The papers are sent herewith.
- ☞ **गृह मंत्रालय के दिनांक..... के कार्यालय ज्ञापन संख्या.....की प्रतिलिपि फाइल में रख दी गई है।**
  A copy of Ministry of Home Affairs O.M. No.....dated.....is placed on the file.
- ☞ **मामला अभी वित्त मंत्रालय के विचाराधीन है।**
  The matter is still under consideration of the Ministry of Finance.

कारगिल विजय दिवस: ज़रा याद करो कुर्बानी

''या तो तू युद्ध में बलिदान देकर स्वर्ग को प्राप्त करेगा अथवा विजयश्री प्राप्त कर पृथ्वी का राज्य भोगेगा।''

गीता के इसी श्लोक को प्रेरणा मानकर भारत के शूरवीरों ने कारगिल युद्ध में दुश्मनों को पाँव पीछे खींचने के लिए मजबूर कर दिया था।

26 जुलाई, 1999 के दिन भारतीय सेना ने कारगिल युद्ध के दौरान चलाए गए 'ऑपरेशन विजय' को सफलतापूर्वक अंजाम देकर भारत भूमि को घुसपैठियों के चंगुल से मुक्त कराया था। इसी की याद में 26 जुलाई, अब हर वर्ष कारगिल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

यह दिन है उन शहीदों को याद कर अपने श्रद्धा-सुमन अर्पण करने का, जो हँसते-हँसते मातृभूमि की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। यह दिन समर्पित है उन्हें, जिन्होंने अपना आज, हमारे कल के लिए बलिदान कर दिया।

कारगिल युद्ध की पृष्ठभूमि: कारगिल युद्ध जो कारगिल संघर्ष के नाम से भी जाना जाता है, भारत और पाकिस्तान के बीच 1999 में मई के महीने में कश्मीर के कारगिल जिले से प्रारंभ हुआ था। इस

अमित भास्करराव कौलकार
कनिष्ठ कार्यालय सहायक, मातौरि

युद्ध का कारण बड़ी संख्या में पाकिस्तानी सैनिकों व पाक समर्थित आतंकवादियों का लाइन ऑफ कंट्रोल यानी भारत-पाकिस्तान की सीमा पर वास्तविक नियंत्रण हासिल कर सियाचिन-ग्लेशियर पर भारत की स्थिति को कमज़ोर कर हमारी राष्ट्रीय अस्मिता के लिए खतरा पैदा करना था।

पूरे दो महीने से ज़्यादा चले इस युद्ध में भारतीय थलसेना व वायुसेना ने अपनी मातृभूमि में घुसे आक्रमणकारियों को मार भगाया था। स्वतंत्रता का अपना ही मूल्य होता है, जो वीरों के रक्त से चुकाया जाता है।

हिमालय से ऊँचा था साहस उनका: इस युद्ध में हमारे लगभग 527 से अधिक वीर योद्धा शहीद व 1300 से ज़्यादा घायल हो गए थे, जिनमें से अधिकांश अपने जीवन के 30 वसंत भी नही देख पाए थे। शहीदों ने भारतीय सेना की शौर्य व बलिदान की उस सर्वोच्च परम्परा का निर्वाह किया, जिसकी सौगन्ध हर सिपाही तिरंगे के समक्ष लेता है।

इन रणबाँकुरों ने भी अपने परिजनों से वापस लौटकर आने का वादा किया था, जो उन्होंने निभाया भी, मगर उनके आने का अन्दाज़ निराला था। वे लौटे मगर लकड़ी के ताबूत में, उसी तिरंगे में लिपटे हुए, जिसकी रक्षा की सौगन्ध उन्होंने खाई थी। जिस राष्ट्रध्वज के आगे कभी उनका माथा सम्मान से झुका होता था, वही तिरंगा मातृभूमि के इन बलिदानी जाँबाज़ों से लिपटकर उनकी गौरव गाथा का बखान कर रहा था।

भारत के वीर सपूत:

कप्तान विक्रम बत्रा: 'ये दिल माँगे मोर' – हिमाचल प्रदेश के छोटे से कस्बे पालमपुर के 13 जम्मू-कश्मीर राइफल्स के कप्तान

विक्रम बत्रा उन बहादुरों में से एक है, जिन्होंने एक के बाद एक कई सामरिक महत्व की चोटियों पर भीषण लड़ाई के बाद फतह हासिल की थी।

यहाँ तक कि पाकिस्तानी लड़ाकों ने भी उनकी बहादुरी को सलाम किया था और उन्हें 'शेरशाह' के नाम से नवाजा गया था। अमर शहीद कप्तान विक्रम बत्रा को अपने अदम्य साहस व बलिदान के लिए मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च सैन्य पुरस्कार 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया गया।

कैप्टन अनुज नायर: 17 जाट रेजिमेंट के बहादुर कप्तान अनुज नायर टाइगर हिल्स सेक्टर की एक महत्वपूर्ण चोटी 'वन पिंपल' की लड़ाई में अपने 6 साथियों के शहीद होने के बाद भी मोर्चा सम्भाले रहे। गम्भीर रूप से घायल होने के बाद भी उन्होंने अकेले ही दुश्मनों से लोहा लिया, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय सेना इस सामरिक चोटी पर भी वापस कब्जा करने में सफल रही। इस वीरता के लिए कप्तान अनुज को मरणोपरांत भारत के दूसरे सबसे बड़े सैनिक सम्मान 'महावीर चक्र' से नवाज़ा गया।

मेजर पद्मपाणि आचार्य: राजपूताना राइफल्स के मेजर पद्मपाणि आचार्य भी कारगिल में दुश्मनों से लड़ते हुए शहीद हो गए। उनके भाई भी द्रास सेक्टर में इस युद्ध में शामिल थे। उन्हें इस वीरता के लिए 'महावीर चक्र' से सम्मानित किया गया।

लेफ्टिनेंट मनोज पांडेय: 1/11 गोरखा राइफल्स के लेफ्टिनेंट मनोज पांडेय की बहादुरी की इबारत आज भी बटालिक सेक्टर के 'जुबार टॉप' पर लिखी है। अपनी गोरखा पलटन लेकर दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में 'काली माता की जय' के नारे के साथ उन्होंने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए। अत्यंत दुर्गम क्षेत्र में लड़ते हुए मनोज पांडेय ने दुश्मनों के कई बंकर नष्ट कर दिए।

कप्तान सौरभ कालिया: भारतीय वायुसेना भी इस युद्ध में जौहर दिखाने में पीछे नहीं रही। टोलोलिंग की दुर्गम पहाड़ियों में छिपे घुसपैठियों पर हमला करते समय वायुसेना के कई बहादुर अधिकारी व अन्य रैंक भी इस लड़ाई में दुश्मन से लोहा लेते हुए शहीद हुए। सबसे पहले कुर्बानी देने वालों में से थे कप्तान सौरभ कालिया और उनकी पैट्रोलिंग पार्टी के जवान। घोर यातना सहने के बाद भी कप्तान कालिया ने कोई भी जानकारी दुश्मनों को नहीं दी।

स्क्वाड्रन लीडर अजय अहूजा: स्क्वाड्रन लीडर अजय आहूजा का विमान भी दुश्मन गोलीबारी का शिकार हुआ। अजय का लड़ाकू विमान दुश्मन की गोलीबारी में नष्ट हो गया, फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और पैराशूट से उतरते समय शत्रुओं पर गोलीबारी जारी रखी और लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट नचिकेता: इस युद्ध में पाकिस्तान द्वारा युद्धबंदी बनाए गए। वीरता और बलिदान की यह फेहरिस्त यहाँ खत्म नहीं होती। भारतीय सेना के विभिन्न रैंकों के लगभग 30,000 अधिकारी व जवानों ने ऑपरेशन विजय में भाग लिया।

कोई भी युद्ध हथियारों के बल पर नहीं लड़ा जाता है, युद्ध लड़े जाते हैं साहस, बलिदान, राष्ट्रप्रेम व कर्त्तव्य की भावना से और हमारे भारत में इन जज्बों से भरे युवाओं की कोई कमी नहीं है।

मातृभूमि पर सर्वस्व न्योछावर करने वाले अमर बलिदानी भले ही अब हमारे बीच नहीं है, मगर इनकी यादें हमारे दिलों में हमेशा-हमेशा के लिए बसी रहेंगी...

''शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले,
वतन पे मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा''

काठी के नीचे जेवर (कहानी)

सुनील रॉय
कनिष्ठ कंपाउंडर (दवाखाना)

एक बार बाज़ार में चहलकदमी करते एक व्यापारी को व्यापार के लिए एक अच्छी नस्ल का ऊँट नज़र आया।

व्यापारी और ऊँट बेचने वाले ने वार्ता कर, एक सौदेबाज़ी की। ऊँट विक्रेता ने अपने ऊँट को बहुत अच्छी कीमत में बेचने के लिए, अपने कौशल का प्रयोग कर के व्यापारी को सौदे के लिए राजी कर लिया। वहीं दूसरी ओर व्यापारी भी अपने नए ऊँट के अच्छे सौदे से खुश था। व्यापारी अपने पशुधन के बेड़े में एक नए सदस्य को शामिल करने के लिए उस ऊँट के साथ गर्व से अपने घर चला गया।

घर पहुँचने पर, व्यापारी ने अपने नौकर को ऊँट की काठी निकालने में मदद करने के लिए बुलाया। भारी गद्देदार काठी को नौकर के लिए अब अपने बलबूते पर ठीक करना बहुत मुश्किल हो रहा था। काठी के नीचे नौकर को एक छोटी मखमली थैली मिली, जिसे खोलने पर पता चला कि वह कीमती गहनों से भरी हुई है। नौकर अति उत्साहित होकर बोला, 'मालिक आपने तो केवल एक ऊँट खरीदा। लेकिन देखिए इसके साथ क्या मुफ़्त आया है?'

अपने नौकर के हाथों में रखे गहनों को देखकर व्यापारी चकित रह गया। वे गहने असाधारण गुणवत्ता के थे, जो धूप में जगमगा और टिमटिमा रहे थे। व्यापारी ने कहा, ''मैंने ऊँट खरीदा है, गहने नहीं! मुझे इन जेवर को ऊँट बेचने वाले को तुरंत लौटा देना चाहिए।'' नौकर हतप्रभ सा सोच रहा था कि उसका स्वामी सचमुच मूर्ख है! वो बोला, ''मालिक! इन गहनों के बारे में किसी को पता नहीं चलेगा।'' फिर भी, व्यापारी वापस बाजार में गया और वो मखमली थैली ऊँट बेचने वाले को वापस लौटा दी।

ऊँट बेचने वाला बहुत खुश हुआ और बोला, ''मैं भूल गया था कि मैंने इन गहनों को सुरक्षित रखने के लिए ऊँट की काठी में छिपा दिया था। आप पुरस्कार के रूप में अपने लिए कोई भी रत्न चुन सकते हैं।'' व्यापारी ने कहा 'मैंने केवल ऊँट का सौदा किया है, इन गहनों का नहीं। धन्यवाद, मुझे किसी पुरस्कार की आवश्यकता नहीं है।'

व्यापारी ने बार-बार इनाम के लिए मना किया, लेकिन ऊँट बेचने वाला बार-बार इनाम लेने पर जोर डालता रहा।

अंत में व्यापारी ने झिझकते और मुस्कुराते हुए कहा, ''असल में जब मैंने थैली वापस आपके पास लाने का फैसला किया था, तो मैंने पहले ही दो सबसे कीमती गहने लेकर, उन्हें अपने पास रख लिया।''

इस स्वीकारोक्ति पर ऊँट विक्रेता थोड़ा स्तब्ध था और उसने झट से गहने गिनने के लिए थैली खाली कर दी। वह बहुत आश्चर्यचकित होकर बोला ''मेरे सारे गहने तो इस थैली में हैं! तो फिर आपने कौन से गहने रखे?'' ''दो सबसे कीमती वाले' व्यापारी ने जवाब दिया। 'मेरी ईमानदारी और मेरा स्वाभिमान''

आप एक छोटे बच्चे को सत्यनिष्ठा कैसे सिखाएँगे? रोजर जेनकिंस ने इसे इस रूप में समझाया है, ''सही काम करने की क्षमता या सही काम करने का चयन करने की क्षमता, आपको गलत काम करने से दूर रख सकती हैं।''

क्यों ज़रूरी है राजभाषा हिंदी? - एक परिचर्चा

लालमनी पाल
पर्यवेक्षक, राजभाषा

कुछ दिनों पहले 'हिंदी के भविष्य' पर हो रही संगोष्ठी में श्रोताओं की तरफ़ से एक प्रश्न आया, जिसने मुझे एक महत्वपूर्ण बात पर गौर करके, इस पर स्वयं को और अन्य लोगों को जागरूक करने के लिए प्रेरित किया। संगोष्ठी में राजभाषा के स्वरूप पर चर्चा हो रही थी और हिंदी के आगे की राह पर विचार हो रहा था। तभी एक सज्जन ने प्रश्न किया कि 'अपनी भाषा को लेकर जागरूकता हमें एक सरकारी नौकरी में आकर, कार्यालय की परिधि में ही होती है। वास्तव में, बाहर की दुनिया में तो हिंदी भाषा में बात करने, शिक्षा पाने, साक्षात्कार करने पर हमें प्राथमिकता नहीं दी जाती। ऐसे में आपको क्या लगता है कि हिंदी का भविष्य क्या है? और क्या केवल राजभाषा को प्रोत्साहित करके हम अपने वास्तविक लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं?'

उस समय इस प्रश्न ने मुझे सिक्के के दो पहलुओं पर विचार करने के लिए प्रेरित किया।

अभी बीते कुछ दिनों की ही बात है, अखबार में एक खबर आई कि मध्यप्रदेश के इंदौर ज़िले के एक सरकारी कॉलेज में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही एक प्रथम वर्ष की छात्रा ने आत्महत्या कर ली। उसके नोट में यह पाया गया कि उसने 12वीं तक हिंदी मीडियम में पढ़ाई की थी और इस कारण उसका कॉलेज में 'मज़ाक' उड़ाया गया। ऐसी स्थिति में क्या केवल राजभाषा हिंदी में काम करके हम हिन्दी भाषा को प्रसारित कर सकते हैं?

संविधान के निर्माण के बाद और भाषा को लेकर हुई संवैधानिक समिति में चर्चा को ध्यान में रखते हुए एक बात तो होती है कि हमारे संवैधानिक निर्माता हिंदी भाषा को प्रमुखता देना चाहते थे। ऐसे में हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा देने का मुख्य उद्देश्य केवल इसे राजकाज के कार्य तक सीमित रखना नहीं था। यदि हम हिंदी भाषा को केवल सरकारी कार्यालयों की परिधि तक सीमित रखेंगे तो हम इसके दूरदर्शी उद्देश्य को नज़रंदाज़ करेंगे।

1. व्यापक स्वीकृति:

हिंदी भाषा को राजभाषा बनाने का मुख्य उद्देश्य इसकी स्वीकृति की परिधि को बढ़ाना है। भारत एक लोकतान्त्रिक देश है। यह दुनिया का सबसे बड़ा गणतंत्र होने के साथ-साथ सबसे अधिक विविधताओं से युक्त है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की 43% आबादी की मातृभाषा हिंदी है। यहाँ सभी भाषाओं का सम्मान होता है और उन भाषाओं का प्रयोग करने की प्रवृत्ति भी है। सरकारी तंत्र में राजभाषा हिंदी के प्रयोग से देश के विभिन्न कोनों में लोग इस भाषा से परिचित होंगे और कुछ अपनी भाषा का इसमें और कुछ हिंदी का अपनी भाषा में आदान-प्रदान करते रहेंगे। इससे यह एक संपर्क भाषा के रूप में अपनी पहचान बनाने में भी सफल होगी और सभी देशवासियों को एक-दूसरे से वार्तालाप करने के लिए विदेशी भाषा का सहारा नहीं लेना पड़ेगा।

2. संपर्क भाषा:

हिंदी को संपर्क भाषा बनाना बहुत आवश्यक है। इसके लिए राजभाषा नीति में प्रत्येक क्षेत्र के लिए हिंदी में पत्राचार के लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं ताकि धीरे-धीरे ही सही, इस भाषा को विचार-विमर्श का माध्यम बनाया जा सके। हिंदी में वार्तालाप/ पत्राचार करके हम अपनी बात को स्पष्ट रूप से समझा सकते हैं और इससे काम में सरलता और स्पष्टता ला सकते हैं। यह समस्त भारत को एकसूत्र में बांधने का काम करेगी और हम भाषा के क्षेत्र में भी 'आत्मनिर्भर' हो सकेंगे।

3. काम करने में सहजता:

हिन्दी के प्रयोग का सबसे प्रोत्साही कारण इसकी सरल प्रवृत्ति है। इसे जैसे बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है। इसका व्याकरण सरल है। राजभाषा विभाग द्वारा भी

समय–समय पर इसकी सहजता की बात की गई है। कार्यालयीन हिंदी और सामाजिक हिंदी के अंतर को कम करने की बात कही है, जिसका अनुप्रयोग करके हम अपने कार्यों को सहजता से कर सकते हैं।

4. समावेशी प्रवृत्ति:

हिंदी लचीली भाषा है। यह कठोर नहीं है। इसकी समावेशी प्रवृत्ति की परिचायक, अन्य भाषाओं के शब्दों को सहजता से अपने में ढाल लेने की क्षमता है। राजभाषा विभाग की नीति में अनुच्छेद 351 में भारत की सामासिक संस्कृति की बात की गई है। हिंदी भी इसी सामासिक संस्कृति का प्रतीक है और सभी भाषा के शब्दों को सहजता से अपने में स्वीकार करते हुए वृद्धि करती है।

5. संस्कृति की परिचायक:

हिंदी भाषा हमारी संस्कृति की परिचायक है। ऐसे कितने देसी शब्द होते हैं जो केवल भाषा–विशिष्ट में ही प्रयोग किए जाते हैं। जैसे अंग्रेज़ी में 'खाट' के लिए शब्द 'कॉट' होता है लेकिन कॉट शब्द में भारतीय परिदृश्य की परिकल्पना नहीं की जा सकती है, जो 'खाट' शब्द से आती है। स्कूलों/कॉलेजों में छात्र विनिमय कार्यक्रमों में एक ओर जहां अंग्रेज़ी आवश्यक होती है, वहीं अपनी भाषा हिंदी भी क्योंकि इसके बिना कभी भी दो संस्कृतियों का आदान–प्रदान नहीं हो सकता।

■ मराठी भाषा गौरव दिवस ■

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में दिनांक 27 फरवरी 2024 को मराठी भाषा गौरव दिवस का पर्व मनाया गया। मराठी भाषा गौरव दिवस प्रत्येक वर्ष 27 फरवरी को प्रसिद्ध मराठी कवि श्री विष्णु वामन शिरवाडकर के सम्मान में मनाया जाता है। शिरवाडकर जी को 'कुसुमाग्रज' के नाम से भी जाना जाता है। इन्होंने महाराष्ट्र के सांस्कृतिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और मराठी भाषा को ज्ञान की भाषा बनाने के लिए अथक प्रयास किए। यह दिवस मराठी साहित्य की महानता को सम्मानित करने के लिए मनाया जाता है। यह भाषा 42 बोलियों के साथ भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। टकसाल, मुंबई में इस दिवस की सभी मराठी भाषियों को बधाई और शुभकामनाएँ दी गई।

विश्व हिन्दी दिवस

विश्व हिन्दी दिवस प्रति वर्ष 10 जनवरी को पूरे विश्व में मनाया जाता है। इसे मनाने का मुख्य उद्देश्य हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना, हिन्दी के प्रति अनुराग पैदा करना और वैश्विक स्तर पर इसे एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की वर्षगांठ मनाने के संदर्भ में पहली बार यह दिवस, वर्ष 2006 में मनाया गया। यह उस दिन को चिह्नित करता है, जब वर्ष 1949 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में पहली बार हिंदी बोली गई थी। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी, 2006 से प्रति वर्ष विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाये जाने की घोषणा की थी।

10 जनवरी, 2024 को भारत सरकार टकसाल, मुंबई में विश्व हिन्दी दिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कर्मचारियों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए नई प्रतियोगिताएं रखी गईं।

1. 'तस्वीर क्या कहती है?' कहानी लेखन प्रतियोगिता में दो तस्वीरें प्रदर्शित की गई, जिनके आधार पर प्रतिभागियों को काल्पनिक कहानी लिखनी थी। प्रतिभागियों ने बहुत बढ़–चढ़ कर और उत्साह से इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

2. 'विश्व की भाषा, हिन्दी भाषा' विषय पर पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। कर्मचारियों द्वारा रचनात्मकता का बखूबी प्रदर्शन किया गया।

विश्व हिंदी दिवस के दौरान हुई कहानी लेखन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट कहानियों को यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है:

मनमोहक गाँव

भारत तो सदियों से ही मनमोहक देश रहा है, जिसकी खुबसूरती चुम्बक की तरह विदेशियों को हमेशा आकर्षित करती रही है। कहा यह भी जाता है कि भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है। ऐसा ही एक गाँव है शिवपुर, जो उत्तराखंड के अल्मोड़ा

ज़िले में स्थित है। शिवपुर गाँव नदी के किनारे बसा हुआ है। गंगा नदी का अविरत प्रवाह मानो इस गाँव में चार चाँद लगा देता है। यहाँ नदी में उठती लहरें देखकर मन खुश हो जाता है। गाँव के पीछे खड़ा हिमालय पर्वत मानो गाँव की रक्षा करते हुए इसे जन्नत बना देता है। हरियाली गाँव को हरा–भरा बनाए रखने में अहम भूमिका निभाती है। किवदंतियों के अनुसार भगवान शिव ने यहाँ योग–साधना की थी, जिसके चलते गाँव का नाम शिवपुर पड़ा। अब तो सोचा जा सकता है, जहाँ स्वंय ईश्वर ने निवास किया होगा, वो गाँव कितना मनमोहक होगा। जैसे यहाँ का नैसर्गिक वातावरण, वैसे ही यहाँ के लोग, जो आपस में मिल–जुलकर रहते थे और एक– दूसरे की मदद करने में हमेशा तत्पर रहते थे। गाँव के लोग सुख–दु:ख में हमेशा साथ खड़े रहते थे, जो एकता का प्रतीक था। गाँव के लोग आधुनिकीकरण से मानो कोसों दूर थे और अपनी इस अलौकिक दुनिया में स्वस्थ एवं मस्त थे। नदी पास होने के कारण गाँववासी खेती करते। अपनी मेहनत से अच्छा खासा धन अर्जित करते थे। गाँव के पूर्व द्वार पर एक विशाल शिव मंदिर था, जहाँ सोमवार का साप्ताहिक बाज़ार और मेला लगता था। दूर–दूर से गाँव के लोग यहाँ दर्शन करने सोमवार को आया करते थे। इसी तरह गाँव के लोगों का यह सोमवारी मेला आय का स्रोत भी बनता था। गाँव में नाममात्र के अस्पताल थे,

क्योंकि गाँव के लोग निरोगी रहते थे। शुद्ध हवा, हिमालय की गोद में बसा गाँव, कोई बिमार कैसे पड़े? गाँव के उत्तरी छोर पर योग आश्रम था, जहाँ योग गुरू निरोगी तन और निरोगी मन बनाए रखने की शिक्षा देते थे, योग आश्रम के चलते विदेशी यात्रियों की भी अच्छी–खासी भीड़ रहती थी। यह कहना गलत नहीं होगा कि यह योग–आश्रम भी गाँव वालों के आय स्रोत का ज़रिया था। पहाड़ होने की वजह से गाँव के लोग पशु–पालन का भी कार्य करते थे। लोग सुबह से अपने कार्य में जुट जाते और दिन–भर मेहनत करके अपना एवं अपने परिवार का पालन–पोषण करते। गाँव की सबसे बड़ी खासयित यह थी कि लोग अपने बड़ों का बहुत आदर करते थे। जितना पवित्र वातावरण, उतना ही पवित्र लोगों का मन। सच कहें तो यह गाँव उत्तराखण्ड का स्विट्ज़रलैंड था मानो कि कुदरत सच में यहाँ अलौकिक है। इस गाँव की दैविक, नैसर्गिक, साहित्यिकी शक्ति लोगों को अपनी ओर खींचती। यह सचमुच बाहर की दुनिया से दूर, शांति का प्रतीक था।

पुरेन्द्र सी. दूबे
वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक (धातु–परीक्षण)

तकनीकी युग

एक समय ऐसा था जब इंसान पीने के पानी के लिए कुएँ पर निर्भर थे। ज़माना बदलता गया और फिर दौर आया हैंड–पम्प का, फिर पानी के शुद्धीकरण के लिए मशीनों का। आज हम जिस युग में हैं, उसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सहारे हमें प्यूरिफायर को चालू करने की भी ज़रूरत नहीं। मौखिक रूप से कमांड देने पर यह चालू हो जाएगा।

एक बटन दबाते ही एलेक्सा हमारे मन–पसंद गाने लगा देती है। स्वयं संकेत के माध्यम से हम मशीनों से भी काम करवा लेते हैं। हमारी दुनिया केवल मोबाइल फोन और लैपटॉप के ईर्द–गिर्द घूमती है। इंसान इन मशीनों का गुलाम बनकर रह गया है। जितना इंसान का मशीनों से लगाव बढ़ता जा रहा हैं, उतनी ही उसकी सोचने की क्षमता और प्रकृति से लगाव खत्म होता जा रहा है, ऐसा प्रतीत होता है कि यदि हमारे हाथ में एक 'Rubics cube' दे दिया जाए,तो हम चाहेंगे की कृत्रिम बुद्धिमत्ता के ज़रिए हम उसे बिना हाथ लगाए सही तरीके से सुलझा लें। जितनी–जितनी मशीनी सहायता हमें उपलब्ध होती जा रही है। उतनी ही हस्तकारिता समाप्त होती जा रही है। इंसान जिस मशीन–मानव अथवा रोबोटिक्स के दौर से गुजर रहा है, वह यह अपेक्षा रखता है कि घर के मामूली से मामूली कार्य भी रोबोट कर लें। जहाँ हम परिवार के साथ मिल बैठ कर खान–पान किया करते हैं, ज़माना ऐसा भी आ सकता है कि घर का हर एक सदस्य अपने खान–पान के लिए, केवल मशीनों पर निर्भर हो।

मशीनों से लगाव की इतनी लत लग सकती है कि हम प्रकृति के साथ रहकर भी उससे काफी दूर और अकेले रह सकते हैं। ऐसा भी ज़माना आ सकता है, जब हम सोते जागते केवल मशीनों से वार्तालाप करें। हमारे लिए परिवार के सदस्य, पशु–पक्षी कुछ भी महत्वपूर्ण न हो। यह दौर जीवन जीने को सुविधाजनक करने के साथ मानवता को मिटाता चला जाएगा। मानवीय भावनाओं को यह पूर्ण रूप से खत्म करते जाएँगे क्योंकि इंसान का संवाद केवल मशीनों तक ही सीमित होगा। एक तरफ, जहां मशीनें जीवन को सरल बनाती है, दूसरी तरफ यह इंसान से उसका स्वास्थ्य, लगाव, भावनाएँ सब कुछ छीन रही हैं। हाल ऐसा हो जाएगा कि हमारे पालतू–पशु से भी हम यह अपेक्षा करेंगे कि भूख लगने पर अपना खाने को स्वंय लेने की कोशिश करें। ऐसे में हम चाहेंगे कि जिस कृत्रिम बुद्धिमता का सहारा हम ले रहे हैं, वह हमारे रोज़मर्रा के कामों को सहज करे, हमारी रचना करनी की प्रकृति को नहीं, कला को नहीं।

''अकेले ही अकेले हम रह जाएँगे सफर में...
मशीनी युग और कृत्रिम और बुद्धिमत्ता के इस दौर में।''

नीता राजेश
पर्यवेक्षक (धा.परी.)

एसपीएमसीआईएल अंतर-इकाई राजभाषा सम्मेलन (कोलकाता)

एसपीएमसीआईएल अंतर–इकाई राजभाषा सम्मेलन प्रति वर्ष राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए नवाचार साझा करने के लिए मनाया जाता है। निगम कार्यालय तथा इसके नियंत्रण की 09 इकाइयों के राजभाषा अधिकारियों एवं अनुवादकों/कर्मचारियों के लिए दिनांक 19.12.2023 को एसपीएमसीआईएल अंतर इकाई राजभाषा सम्मेलन का आयोजन इस वर्ष भारत सरकार टकसाल, कोलकाता में किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुनील कुमार सिन्हा, निदेशक (मा.सं.), एसपीएमसीआईएल द्वारा की गई। श्री रजत पॉल, मुख्य महाप्रबंधक, भारत सरकार टकसाल, कोलकाता सहित इकाई के अन्य राजभाषा के शीर्ष अधिकारीगण इस सम्मेलन में उपस्थित रहे।

भारत सरकार टकसाल, मुंबई का भी इसमें प्रतिनिधित्व रहा और इसमें गत वर्ष की हिंदी वार्षिक रिपोर्ट पर चर्चा तथा आगामी वर्ष के लिए हिन्दी से जुड़े नए प्रयासों संबंधी विचार–विमर्श किया गया। इसके अतिरिक्त, सभी इकाइयों द्वारा संकलित अपनी इकाइयों के इतिहास पर प्रदर्शनी प्रस्तुत की गई।

टकसाल, मुंबई ने भी भारत सरकार टकसाल, मुंबई के 200 वर्षों के इतिहास का संकलन तैयार किया, जिसमें टकसाल के निर्माण की, इसके उत्पादों और अन्य मील के पत्थरों की दास्तां दर्ज है।

मुंबई मिंट पत्रिका

हिंदी पखवाड़ा, 14-29 सितंबर, 2023

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में दिनांक 14-29 सितंबर, 2023 तक हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी पखवाड़ा बहुत ही धूम–धाम से मनाया गया। हिन्दी पखवाड़े की शुरुआत राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार माननीय गृह मंत्री अमित शाह जी की अध्यक्षता में श्री शिव छत्रपति स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, बालेवाड़ी पुणे (महाराष्ट्र) से की गई तथा इसका समापन भारत सरकार टकसाल मुंबई में किया गया। इसमें सबसे पहले डिजिटल बार कोड के माध्यम से सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी गई तथा आगामी 15 दिनों में होने वाली गतिविधियों की जानकारी तथा आमंत्रण दिया गया। इसके साथ ही पखवाड़े के दौरान टकसाल, मुंबई में 'विचारों का कैनवास' नाम से बोर्ड लगाए गए, जिसमें सभी कर्मचारियों ने राजभाषा हिन्दी को लेकर अपने विचार व्यक्त किए।

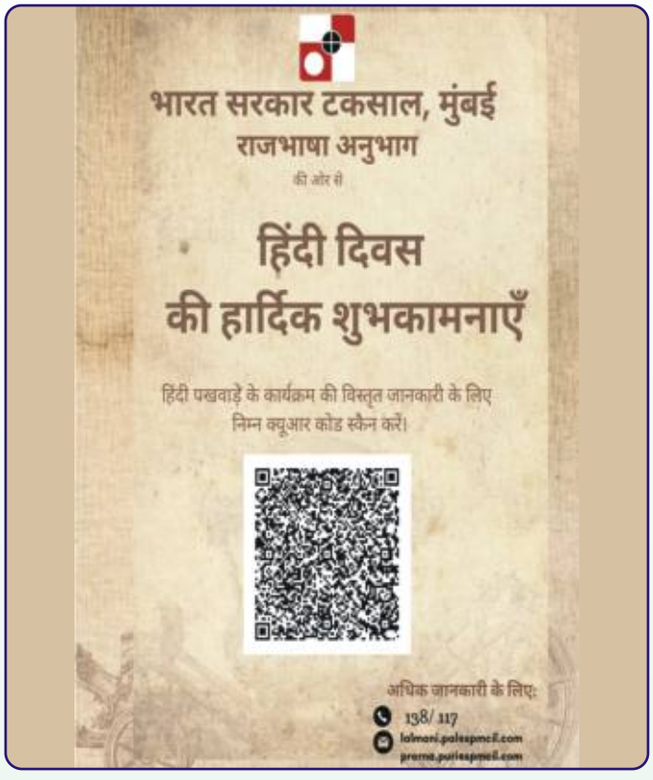

पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

1. निंबध प्रतियोगिता:

निबंध के विषय थे :–

i. टकसाल मुंबई में निगमीकरण से पूर्व व पश्चात कार्यशैली अथवा

ii. राजभाषा उत्थान में तकनीक की भूमिका

हिन्दी निबंध प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक संख्या में अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया।

2. अनुवाद एवं पत्र लेखन प्रतियोगिता:

इस प्रतियोगिता में एक प्रश्न पत्र दिया गया था, जिसमें अनुवाद, पत्र लेखन, मुहावरे हिन्दी से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से हिन्दी लिखने के लिए दिए गए थे, जिसका उद्देश्य था कि कर्मचारी हिन्दी के नए शब्द, वाक्य विन्यास सीखें, हिन्दी अंग्रेजी, शब्दकोश देखें।

3. आशु भाषण प्रतियोगिता:

पखवाड़े को अधिक रोचक बनाने के लिए नवोन्मेष के अन्तर्गत पहली बार आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत प्रतिभागी को लॉटरी प्रक्रिया द्वारा दिये गये विषय पर 1 से 2 मिनट के लिए भाषण देना था। यह प्रतियोगिता सभी वर्ग के कर्मचारियों के लिए थी।

4. फाइल नोटिंग प्रतियोगिता:

यह प्रतियोगिता केवल कार्यपालकों के लिए थी। इस प्रतियोगिता में अधिकारियों द्वारा दैनिक कार्यों में फाइलों पर की जाने वाली नोटिंग अंग्रेजी से हिन्दी में लिखनी थी।

5. हस्त लेख प्रतियोगिता:

यह प्रतियोगिता केवल सुरक्षा कर्मियों तथा कामगारों के लिए

थी। इस के अन्तर्गत एक पैराग्राफ दिया गया था जिसे अपनी हस्तलिपि में लिखना था।

6. प्रश्न मंच प्रतियोगिता:

इस प्रतियोगिता में वर्गीकृत कर्मचारियों तथा औद्योगिक कामगारों के लिए अलग–अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। जिसमें सामान्य ज्ञान विषय से संबंधित प्रश्न पूछे गये थे।

29 सितंबर, 2023 को मुख्य महाप्रबंधक श्री सुधीर साहू की अध्यक्षता में पुरस्कार वितरण तथा हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर राजभाषा अनुभाग द्वारा पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई सभी प्रतियोगिताओं के दृश्यों तथा विश्व में राजभाषा हिन्दी की स्थिति के साथ–साथ संविधान में राजभाषा का प्रावधान, सभी को समाहित करते हुए इसकी जानकारी एक वीड़ियो के माध्यम से प्रदर्शित की गई। श्रीमती इंदरदीप कौर, उप महाप्रबन्धक (मा. सं.) ने राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा के क्षेत्र में एसपीएमसीआईएल के शीर्ष प्रबंधन द्वारा अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में किया जा रहा है। अतः हम सभी को इससे सीख लेते हुए अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने चाहिए। अंत में, श्री सुधीर साहू, मुख्य महाप्रबन्धक ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा अनुभाग द्वारा वीड़ियो के माध्यम से दी गई जानकारी सराहनीय है। इस तरह से नवोन्मेष तथा नवाचार प्रत्येक विभाग को करना चाहिए। इसके साथ ही, इकाई में राजभाषा कार्यान्वयन को कैसे बढ़ाया जाए, उस संबंध में अपना मार्गदर्शन दिया।

एसपीएमसीआईएल स्थापना दिवस

केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने दिनांक 15 फरवरी, 2024 को नई दिल्ली में हाइब्रिड मोड के माध्यम से भारत प्रतिभूति मुद्रण एवं मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड (एसपीएमसीआईएल) के 19वें स्थापना दिवस की अध्यक्षता की। इस कार्यक्रम में वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामले विभाग के सचिव श्री अजय सेठ, एसपीएमसीआईएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री विजय रंजन सिंह और वित्त मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल हुए। इस कार्यक्रम में एसपीएमसीआईएल की विभिन्न इकाइयों ने वर्चुअल माध्यम से भाग लिया गया; वरिष्ठ अधिकारियों, कर्मचारियों, शीर्ष द्विपक्षीय मंच के मान्यता प्राप्त यूनियनों के कर्मचारियों/प्रतिनिधियों, ईपीएफ और जीपीएफ ट्रस्टियों और एससी, एसटी और ओबीसी संगठनों के कर्मचारियों / प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। केंद्रीय वित्त मंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत सरकार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अन्य देशों के गणमान्य व्यक्तियों को एसपीएमसीआईएल के स्मारिका उत्पाद भेंट किए जाते हैं और विश्व स्तर पर उनकी सराहना की जाती है। एसपीएमसीआईएल की सीएसआर परियोजनाओं का उल्लेख करते हुए केंद्रीय वित्त मंत्री ने कहा कि विशेष रूप से आकांक्षी ज़िलों और दूरदराज़ के क्षेत्रों में ऐसी परियोजनाएं सराहनीय हैं। उन्होंने एसपीएमसीआईएल के कर्मचारियों और बोर्ड से आग्रह किया कि वे तकनीकी प्रगति का बारीकी से निरीक्षण करें और इस विशिष्ट क्षेत्र की बदलती ज़रूरतों के अनुसार स्वाभाविक रूप से प्रतिक्रिया दें।

इसके साथ ही इस अवसर पर एसपीएमसीआईएल के मुख्यालय सहित विभिन्न इकाइयों में कार्यरत अधिकारियों / कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया जाता है। नौ इकाइयों और कॉर्पोरेट कार्यालय के सभी मुख्य महाप्रबंधकों ने कर्मचारियों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए पुरस्कृत किया। इसी श्रृंखला में भारत सरकार टकसाल मुंबई के मुख्य महाप्रबंधक श्री सुधीर साहू ने श्री सुरेश वी. शेट्टी, ईपीएफ़ ट्रस्टी तथा श्री सय्यद मोहम्मद अज़ीम, पर्यवेक्षक (धातु परीक्षण) को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कृत किया ।

सतर्कता जगरूकता सप्ताह

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में 30 अक्टूबर से 5 नवंबर तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस वर्ष इस सप्ताह की थीम 'भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें' था। इसकी शुरुआत में मुख्य महाप्रबंधक की अध्यक्षता में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सत्यनिष्ठा की शपथ ली। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम व प्रतियोगिताएँ:

क्र. सं.	दिनांक	कार्यक्रम
1.	30.10.2023	'सार्वजनिक खरीद' पर व्याख्यान
2.	31.10.2023	सीवीसी, सीडीए, प्रोक्योरमेंट मैनुअल और सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी
3.	01.11.2023	'दैनिक जीवन में नैतिकता' विषय पर व्याख्यान
4.	01.11.2023	प्रत्यक्ष रूप से और ऑनलाइन माध्यम से विक्रेताओं की बैठक की गई।
5.	02.11.2023	भ्रष्टाचार का विरोध करे ; 'राष्ट्र के प्रति समर्पित रहे' विषय पर रंगोली स्पर्धा

राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह मनाया गया। देशभर में प्रत्येक वर्ष 4 मार्च को राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस मनाया जाता है। सर्वप्रथम टकसाल के सभी अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण समारोह किया गया एवं सुरक्षा प्रचार सामग्री का वितरण किया गया। 5 मार्च, 2024 को श्री सदानंद मंडल, प्रबंधक (त. प्र.) ने सामान्य सुरक्षा पर प्रशिक्षण दिया एवं श्री नितिन चौधरी, प्रबंधक (त. प्र.) विद्युत संरक्षा विषय पर प्रशिक्षण दिया। 6-7 मार्च, 2024 को निम्नलिखित प्रतियोगिताएं रखी गई।

1. सुरक्षा पर निबंध प्रतियोगिता
2. सुरक्षा पर वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रतियोगिता
3. पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता

8 मार्च, 2024 को केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल फायर बिग्रेड द्वारा टकसाल के सभी कर्मचारियों को अग्नि सुरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। 9 मार्च, 2024 को श्री सुधीर साहू, मुख्य महाप्रबंधक की अध्यक्षता में समापन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें सुरक्षा सप्ताह के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं में विजेता कार्मिकों को पुरस्कार वितरित किए गए। देशभर में सुरक्षा को लेकर जागरूकता फैलाना और दुर्घटनाओं में कमी लाना राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह का मुख्य उद्देश्य है। इस दौरान हर क्षेत्र में लोगों को सुरक्षा से जुड़ी बातें बताई गई और औद्योगिक दुर्घटनाओं से बचने के तरीका और इससे होने वाले नुकसान के बारे में बताया गया।

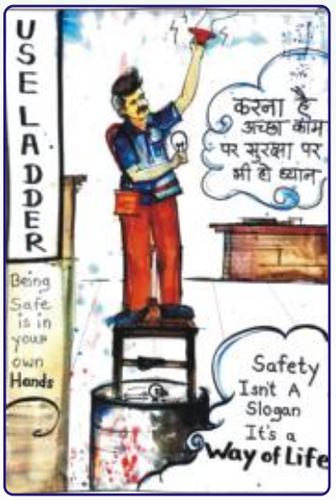

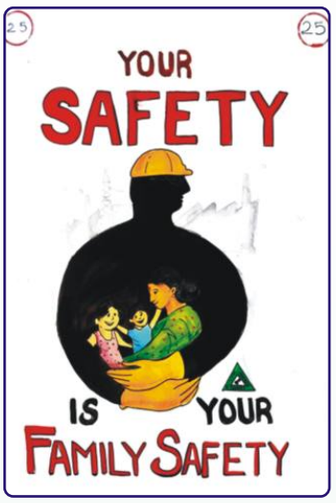

प्रतिभागियों द्वारा बनाए गए चित्र:

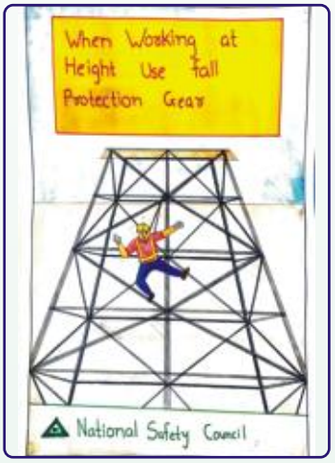

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में शीर्षस्थ अधिकारियों का दौरा

■ भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर, माननीय श्री शक्तिकान्त दास जी

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में शीर्षस्थ अधिकारियों का दौरा

■ भारतीय रिज़र्व बैंक के उप-गवर्नर, माननीय श्री जे. स्वामिनाथन जी

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में शीर्षस्थ अधिकारियों का दौरा

■ भारत प्रतिभूति मुद्रण एवं मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, माननीय श्री विजय रंजन सिंह जी

■ सतर्कता की 34वीं त्रैमासिक बैठक के उपलक्ष्य में माननीय श्री विनय कुमार (आई. ए. एस.), मुख्य सतर्कता अधिकारी (एसपीएमसीआईएल) एवं माननीय श्री बृजेश सिंह (आई.पी.एस.), मुख्य सचिव, मुख्यमंत्री कार्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र।

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में अन्य गतिविधियाँ

निगम सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पहलें

भारत सरकार टकसाल, मुंबई समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए स्वास्थ्य के क्षेत्र में कई सीएसआर संबंधी प्रयास कर रही है।

- 8 मार्च, 2024 को महिला दिवस के अवसर पर भारत सरकार टकसाल, मुंबई द्वारा कामा एवं आलब्लेस अस्पताल में अंबुलेंस तथा कुछ अन्य चिकित्सीय उपकरण प्रदान किए गए।
- भारत सरकार टकसाल द्वारा नायर अस्पताल, मुंबई में दो इलेक्ट्रोसर्जिकल मशीनें प्रदान की गई।
- भारत सरकार वर्ष 2025 तक भारत से टीबी का उन्मूलन करने के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार के इसी विज़न को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार टकसाल, मुंबई ने राजीव गांधी मेडिकल कॉलेज तथा छत्रपति शिवाजी महाराज अस्पताल में चार पोर्टेबल एक्स–रे मशीनें प्रदान की हैं। हम आगे भी इसी तरह अपने दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे।

वृक्षारोपण

मुंबई मिंट पत्रिका

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में श्री बिमल धल, सयुंक्त महाप्रबंधक (धा.परी.) की अध्यक्षता में दिनांक 16.04.2024 को भारत संविधान के शिल्पकार डॉ. भीमराव अम्बेडकर का 134 वीं जयंती समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर टकसाल मुंबई के सभी अधिकारियों, कार्य समिति के सदस्यों, मान्यता प्राप्त यूनियन, एस. सी., एस.टी. एशोसियसन एवं अन्य कर्मचारियों ने बाबा साहब को प्रतिमा पर पुष्प अर्जित किये। इसके उपरान्त उनकी जीवनी पर विभिन्न वक्ताओं ने अपनी राय रखी। इस अवसर पर सभी कर्मचारियों के लिए एक निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विजेताओं को सम्मानित किया गया।

दीपावली का जश्न

आयुर्वेद दिवस

गणतंत्र / स्वतंत्रता दिवस

मुंबई मिंट पत्रिका के प्रकाशन को बेहतर करने के लिए आप सभी की प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव आमंत्रित हैं।
आप अपनी प्रतिक्रियाएँ prerna.puri@spmcil.com या rajbhahsa.igmm @spmcil.com पर भेज सकते है।